Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰہِ وَرُسُلِہٖ
وَلَمْ یُفَرِّقُوْا بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْھُمْ
اُولٰٓئِکَ سَوْفَ یُؤْتِیْھِمْ اُجُوْرَھُمْ

(सूरः अन्निसा : 41)

अनुवाद: और जो अल्लाह और जो लोग उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी में भेदभाव न किया, यही वे लोग हैं जिन्हें वह अवश्य उनका बदला देगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 8
अंक-32-35

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

13 सफ़र 1445 हिज्री कमरी, 31 ज़हूर 1402 हिज्री शम्सी, 31अगस्त 2023 ई.

ख़ुत्बः जुमअः

اَللّٰھُمَّ اَنْجِزْ لِیْ مَا وَعَدْتَّنِیْ۔ اَللّٰھُمَّ اٰتِ مَا وَعَدْتَّنِیْ۔ اَللّٰھُمَّ اِنْ تُھْلِکْ ھٰذِہِ الْعِصَابَۃَ مِنْ اَھْلِ الْاِسْلَامِ لَا تُعْبَدْ فِی الْاَرْضِ

अर्थात् हे अल्लाह! तुमने मुझसे जो वादा किया है उसे पूरा करो। हे अल्लाह! तुमने मुझ से जो वादा किया है वह मुझे दो।

हे अल्लाह! यदि तुम मुसलमानों के इस समूह को नष्ट कर दोगे तो पृथ्वी पर तेरी इबादत नहीं की जाएगी।

हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुश्मन सामने है कुछ ख़बर नहीं कि यहां से बच कर जाना मिलता है या नहीं।

मैं ने चाहा कि शहादत से पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र शरीर से अपना शरीर छू जाऊं सवाद बिन गज़ीया रज़ियल्लाहु अन्हो के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ का अजीब इज़हार।

जंग के दौरान कुछ लोगों को क़तल करने से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोका भी था।

क़ुदरत-ए-इलाही का अजीब तमाशा है कि इस वक़्त लश्कर के खड़े होने की तर्तीब ऐसी थी कि इस्लामी लश्कर, क़ुरैश को असली संख्या से ज़्यादा बल्कि दोगुना नज़र आता था, जिसकी वजह कुफ़्फ़ार भयभीत हुए जाते थे और दूसरी तरफ़ क़ुरैश का लश्कर मुस्लमानों को उनकी असली संख्या से कम-नज़र आता था, जिसके नतीजे में मुस्लमानों के दिल बढ़े हुए थे।

जंग-ए-बदर की तैयारी, सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो का अपने आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अत्यधिक मुहब्बत तथा जंग-ए-बदर के अवसर पर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अत्यधिक पीढ़ा के साथ की जाने वाली दुआओं का वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 जून 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْھَدُ أَنْ لَّا إِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیکَ لَہٗ وَأَشْھَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَ رَسُوْلُہٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ۔ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ۔ مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ۔ اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ۔ اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ۔ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ

सवाद बिन गज़ीया रज़ियल्लाहु अन्हो के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ के अजीब इज़हार का वाक़िया पिछले ख़ुतबा में वर्णन हुआ था। उनके बारे में मज़ीद तफ़सील इस तरह है कि सवाद बिन गज़ीया रज़ियल्लाहु अन्हो इस जंग में फ़ातेहाना शान के साथ लौटे और मुशरेकीन में से एक व्यक्ति ख़ालिद बिन हशशाम को क़ैदी भी बनाया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाद में उनको जंग-ए-ख़ैबर के अम्वाल जमा करने के लिए आमिल निर्धारित फ़रमाया था। कुछ के नज़दीक ऊपर वर्णित वाक़िया हज़रत सवाद बिन गज़ीया रज़ियल्लाहु अन्हो के इलावा सवाद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ मंसूब है लेकिन यही लगता है कि वाक़िया कोई और है और अक्सर इतिहास और जीवनी की पुस्तकों में में यह वाक़िया सवाद बिन ग़िज़्या के नाम से ही वर्णन हुआ है। (ओसोदुल गाबा ,भाग तीन, पृष्ठ 590 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इस वाक़िया के बारे में जो तफ़सील बयान फ़रमाई है वह इस तरह है। लिखा है कि "अब रमज़ान सन् हिजरी 2 की सतरह तारीख़ और जुमा का दिन था और ईसवी हिसाब से 14 मार्च 624 ई.थी। सुबह उठकर सबसे पहले नमाज़ अदा की गई और एक ख़ुदा की इबादत करने वाले लोग खुले मैदान में ख़ुदा ए वाहिद के हुज़ूर सर बसजूद हुए। इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिहाद पर एक ख़ुत्बा फ़रमाया और फिर जब ज़रा रोशनी हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक तीर के इशारा से मुस्लमानों की सफ़ों को दरुस्त करना शुरू किया। एक सहाबी सवाद रज़ियल्लाहु अन्हो नामी सफ़ से कुछ आगे निकला खड़ा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे तीर के इशारा से पीछे हटने को कहा परंतु इत्तिफ़ाक़ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीर की

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

लक्कड़ी उसके सीने पर जा लगी। उसने जुर्रत के अंदाज़ से अर्ज़ किया।"हे अल्लाह! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खुदा ने हक़ और इंसाफ के साथ अवतरित फ़रमाया है परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे नाहक़ तीर मारा खुदा की कसम! मैं तो इस का बदला लूँगा सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उँगलिए दांतों मे दबाए हुए थे हैरान परेशान थे "कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को क्या हो गया है परंतु आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निहायत शफ़क़त से फ़रमाया कि "अच्छा सवाद तुम भी मुझे तीर मार लो। और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सीने से कपड़ा उठा दिया। सवाद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुहब्बत से मुसकुराते हुए आगे बढ़कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सीना चूम लिया। आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्कुराते हुए पूछा। "सवाद!यह तुम्हें क्या सूझी।' उसने दर्द भरी आवाज़ में अर्ज़ किया

"हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुश्मन सामने है कुछ ख़बर नहीं कि यहां से बच कर जाना मिलता है या नहीं। मैं ने चाहा कि शहादत से पहले आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र शरीर से अपना शरीर छू जाऊं।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम-ए, सफ़ा357-358)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम की वफ़ात के क़रीब इसी तरह के वाक़िया का वर्णन फ़रमाया है। जंग-ए-बदर में नहीं बल्कि वफ़ात के वक़्त का वाक़िया वर्णन फ़रमाया है जो इस से मिलता-जुल-ता है। फ़रमाया कि "जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्ला-हु अन्हो को जमा किया फ़रमाया : देखो मैं भी इन्सान हूँ जैसे तुम इन्सान हो मुम्किन है मुझ से तुम्हारे हुक़ूक़ के विषय में कभी कोई ग़लती हो गई हो और मैंने तुम में से किसी को नुक़्सान पहुंचाया हो अब बजाय इस के कि मैं ख़ुदा तआला के सामने ऐसे रंग में पेश हूँ कि तुम मुद्दई बनो, मैं तुमसे यह कहता हूँ कि अगर तुम में से किसी को मुझसे कोई नुक़्सान पहुंचा हो तो वह ईसी दुनिया में मुझसे अपने नुक़्सान की तलाफ़ी करा ले। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जो इशक़ था इस को देखते हुए अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि रसूले करीम सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के इन अलफ़ाज़ से उनके दिल पर कितनी छुरियां चली होंगी और किस तरह उनके दिल में रिक़्क़त तारी हुई होगी। इसलिए ऐसा ही हुआ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो पर रिक़्क़त तारी हो गई। उनकी आँखों से आँसू बह निकले और उन के लिए बात करना मुश्किल हो गया। परंतु एक सहाबीज़ियल्लाहु अन्हो उठे और उन्होंने कहा। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! जब आप सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम ने कहा है कि अगर किसी को मैं ने कोई नुक़्सान पहुंचाया हो तो वह मुझ से उस का बदला ले-ले तो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक बदला लेना चाहता हूँ। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। जल्दी बताओ तुम्हें मुझ से क्या नुक़्सान पहुंचा है। वह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो कहने लगे हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अमुक जंग के अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमस साफे दरुस्त करवा रहे थे कि एक सफ़ से गुज़र कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आगे जाने की ज़रूरत पेश आई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस वक़्त सफ़ को चीर कर आगे गए तो आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोहनी मेरी पीठ पर लग गई आज मैं उस का बदला लेना चाहता हूँ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं उस वक़्त गुस्से में हमारी तलवारें मियानों से बाहर निकल रही थीं और हमारी आँखों से ख़ून टपकने लगा। अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त हमारे सामने मौजूद न होते तो यक़ीनन हम उसके टुकड़े टुकड़े कर देते। परंतु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी पीठ उस की तरफ़ मोड़ दी और फ़रमाया! अपना बदला ले लो और मुझे भी इसी तरह कोहनी मार लो। इस आदमी ने कहा। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अभी नहीं। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोहनी मुझे लगी थी उस वक़्त मेरी पीठ नंगी थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पीठ पर कपड़ा है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया। मेरी पीठ पर से कपड़ा उठा दो कि यह व्यक्ति अपना बदला मुझसे ले-ले। जब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पीठ पर से कपड़ा उठा दिया तो वह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो कांपते् होंटों और बहते हुए आँसूओं के साथ आगे बढ़ा और उसने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नंगी पीठ पर मुहब्बत से एक बोसा दिया और कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुजा बदला और कुजा यह तुच्छ ग़ुलाम

जिस वक़्त हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुझे यह मालूम हुआ कि शायद वह वक़्त क़रीब आ पहुंचा है जिसके तसव्वुर से भी हमारे रौंगटे खड़े हो जाते हैं तो मैं ने चाहा कि मेरे होंट एक दफ़ा इस बाबरकत शरीर को छू लें जिसे ख़ुदा ने तमाम बरकतों का मजमूआ बनाया है। अतः मैं ने इस कोहनी लगने को अपने इस उद्देश्य को पूरा करने का एक बहाना बनाया और मैं ने चाहा कि आख़िरी दफ़ा आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम का बोसा तो ले लूं। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम! कोहनी लगना क्या चीज़ है। हमारी तो हर चीज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए क़ुर्बान है। मेरे नफ़्स ने तो यह एक बहाना बनाया था ता कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बोसा लेने का अवसर मिल जाए। वह सहाबा रज़ि-यल्लाहु अन्हो जो इस व्यक्ति को क़तल करने पर आमादा हो रहे थे।' उस की यह बात सुनके उस वक़्त बड़े गुस्सा में थे। "जब उन्होंने यह नज़ारा देखा' कि यहां तो उस के दिल में कुछ और ही बात है " तो वह कहते हैं फिर हम में से हर व्यक्ति को अपने आप पर गुस्सा आने लगा कि हमें क्यों न यह अवसर मिला कि हम अपने प्यारे का बोसा ले लेते।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "यह वह व्यक्ति था जो हमारा हादी और राहनुमा था" अर्थात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" जिस ने अपनी ज़िंदगी के हर विभाग में हमारे लिए वह नमूना दिखाया जिसकी मिसाल और किसी नबी में नहीं मिल सकता।

(अनवारूल उलूम, भाग 17 पृष्ठ 128 से 130)

जंग-ए-बदर में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का शआर अर्थात निशान या नारा क्या था? इस बारे में आता है कि हज़रत अरवा बिन जुबेर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि जंग वाले दिन मुहाजेरीन का शआर يَابَنِىْ عَبْدِالرَّحْمٰن और क़बीला ख़ज़रज का शआर يَابَنِىْ عَبْدِاللهِ था और क़बीला ओस का शआर يَابَنِىْ عُبَيْدِاللهِ था और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने घुड़सवारों को خَيْلُ اللهِ का नाम दिया। एक रिवायत यह भी है कि इस रोज़ सब का शआर يَامَنْصُوْرُ اَمِتْ था अर्थात मंसूर! मार दो

(سبل الھدیٰ والرشاد باب غزوۃ بدر الکبریٰ, भाग 4 पृष्ठ 44 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

एक रिवायत में है कि ग़ज़व-ए-बदर में अंसार मदीना का शआर या जैसा कि मैं ने वर्णन किया है निशान या नारा अहद अहद था जो इसलिए मुतय्यन किया गया था कि रात के अंधेरे में या बेहद घमसान की लड़ाई में इस नारे से पहचाना जा सके कि यह अंसारी हैं। इसी तरह मुहाजेरीन मुस्लमानों का शआर या नारा يَابَنِىْ عَبْدِالرَّحْمٰن था।

(अल् सीरतुल हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 242 दारुल कुतुब बेरूत 2002 ई.)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जंग के मुताल्लिक़ हिदायात जो थीं उनकी मज़ीद तफ़सील इस तरह वर्णन हुई है कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफ़ों को सीधा कर लिया तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया जब तक मैं तुम्हें हुक्म न दूं तुम हमला न करना और अगर दुश्मन तुम से क़रीब आ जाए तो उनको तीर-अंदाज़ी करके पीछे धकेलना क्योंकि फ़ासले से तीर-अंदाज़ी अक्सर औक़ात बेकार साबित होती है और तीर ज़ाए होते रहते हैं। इसी तरह तलवारें भी उस वक़्त तक न सौंतना जब तक दुश्मन बिलकुल क़रीब न आ जाए।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक ख़ुत्बे का वर्णन आता है। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने ख़ुतबा दिया जिसमें जिहाद की तरग़ीब दी और सब्र की तलक़ीन फ़रमाई। तथा फ़रमाया मुसीबत के वक़्त सब्र करने से अल्लाह तआला परेशानियाँ दूर फ़रमाता है और ग़मों से निजात अता फ़रमाता है। (अल् सीरतुल हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 221 दारुल कुतुब इल्मिया, 2002 ई.) (तारीख़ अल्तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 32 प्रकाशन आदारुल कुतुब बेरूत)

एक जगह आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह जो ख़ुतबा है इस की तफ़सील इस तरह वर्णन हुई है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की हमद-ओ-सना वर्णन की और फ़रमाया मैं तुम्हें इस बात पर उभारता हूँ जिस पर अल्लाह ने उभारा है और उस चीज़ से तुम्हें मना करता हूँ जिस से उसने तुम्हें मना किया है। अल्लाह तआला जो बुज़ुर्ग-ओ-बरतर है वह तुम्हें हक़ का हुक्म देता है वह सच्चाई को पसंद करता है वह नेकोकारों को बुलंद मुक़ामात अता फ़रमाता है जो उसके हाँ मौजूद हैं। इस के साथ उनका वर्णन होता है। इस के साथ वह एक दूसरे

शेष पृष्ठ 08 पर

ख़ुत्बः जुमअः

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ेमे से निकले और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह पढ़ रहे थे कि

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ

कि अनक़रीब ये सब के सब शिकस्त खा जाएंगे और पीठ फेर देंगे और यही वह घड़ी है जिस से डराए गए थे और ये घड़ी निहायत सख़्त और निहायत तल्ख़ है

हर उम्मत का फ़िरऔन होता है, इस उम्मत का फ़िरऔन अबुजहल है

अल्लाह तआला ने उसे बुरी तरह क़तल किया,अफरा के दोनों बेटों और मलाएका ने उसे क़तल किया और अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसका काम तमाम किया

जंग-ए-बदर में प्रकट होने वाले हालात और वाक़ियात और बदर के शुहदा का वर्णन

तथा कुतुब अहादीस और हज़रत मसीह मौऊद और ख़ुलफ़ा कराम के उपदेशों की रोशनी में बदर के अवसर पर नुज़ूल-ए-मलायका पर विस्तृत बात चीत

फ़लस्तीन के मज़लूम मुस्लमानों, मुस्लिम उम्मत, पाकिस्तानी अहमदियों तथा अन्य अहम उमूर के लिए की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 07 जुलाई 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुतबा में कुफ़्फ़ार-ए-मक्का पर मुस्लमानों के रोब का वर्णन करते हुए अबुजहल और उत्बा के जंग करने के बारे में इख़्तेलाफ़ का वर्णन हुआ था और फिर अबुजहल के ताने की वजह से उत्बा ने जंग का ऐलान भी किया और यूं बाक़ायदा जंग शुरू हुई

इस की तफ़सील में लिखा है कि उत्बा बिन रबीया अपने भाई शीबा बिन रबीया और अपने बेटे वलीद बिन उत्बा के मध्य चलता हुआ निकला और सफ़ों से आगे निकल कर मुबारिज़त तलब की

(अलसीरतुल नब्वी लेइब्ने हशशाम, पृष्ठ 426 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि उत्बा बिन रबीया आगे बढ़ा और उसके पीछे उस का बेटा और उस का भाई आया और उसने पुकारा कि कौन इस से मुबारिज़त करेगा, मुक़ाबले पर आएगा? तो अंसार के कुछ नौजवानों ने उस को जवाब दिया। उसने पूछा कि तुम कौन हो? उत्बा ने उन अंसार से पूछा कौन हो तुम? उन्होंने उसे बताया कि हम कौन हैं। फिर उसने कहा कि हमारा तुमसे कोई सरोकार नहीं। उत्बा ने उनको यह जवाब दिया। हमारा इरादा तो सिर्फ अपने चचा के बेटों से लड़ने का है। क़ुरैश से, मक्के वालों से हमने लड़ाई करनी है, अंसार से नहीं। और साथ ही बुलंद आवाज़ में पुकार कर कहा। मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हमारे रिश्तेदारों में से हमारे बराबर के लोगों को हमारे मुक़ाबले पर भेजो। तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। उठो हे हम्ज़ा उठो हे अली उठो हे उबैदा बिन हारिस हज़रत हम्ज़ह रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा थे और अली चचाज़ाद हैं जबकि उबैदा रिश्ते में चचा बनते हैं। हम्ज़ह रज़ियल्लाहु अन्हो उत्बा की तरफ़ बढ़े और हज़रत हम्ज़ह रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं मैं शेबा की तरफ़ बढ़ा और अबेदह रज़ियल्लाहु अन्हो और वलीद में दो झड़पों का तबादला हुआ और दोनों में से हर एक ने एक दूसरे को ज़ख़्मी कर के कमज़ोर कर दिया। फिर हम वलीद की तरफ़ मुतवज्जा हुए और उसको मार डाला और अबेदह रज़ियल्लाहु अन्हो को हम उठा कर लाए।

(सुंन अबी दाऊद, किताब अल् जिहाद, बाब फ़ील् मुबारज़, हदीस नंबर : 2665)(اللؤلؤ المكنون सीरत इंसाइक्लोपीडिया पृष्ठ 48 मक्तबा दारुस्सलाम रियाज़ 1433 ह)

इन दोनों ने, हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने तो अपने दुश्मनों को मार दिया। जब हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो अपने साथी हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी फ़ौज में उठा लाए तो उनका पांव कट चुका था। जब उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया तो उन्होंने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या मैं शहीद नहीं हूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक तुम शहीद हो। (अल्तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 32 दारुल कुतुब इल्मिया बेरुत, 2012 ई. हज़रत अबेदह रज़ियल्लाहु अन्हो जो आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद थे उन ज़ख़्मों से जांबर न हो सके और बदर से वापसी पर रास्ते में इंतेक़ाल किया। (उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए : 360)

हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में एक रिवायत में वर्णित है कि जब उनका पांव तलवार से कट गया तो उनके साथी उन्हें उठा कर वापस ले आए। जब उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाए तो उन्हें नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब लिटा दिया गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना क़दम मुबारक उनके नीचे रख दिया। अर्थात अपना पांव उनके सरिया रुख़्सार के नीचे रख दिया। और उबैदा ने बड़ी मुहब्बत से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ देखते हुए अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाहसिल्ली अल्लाह वसल्लम! अगर आज अबूतालिब ज़िंदा होते तो जान लेते कि मैं उनके क़ौल का ज़्यादा हक़दार हूँ। फिर हज़रत अबू तालिब के शेर पढ़े जिसका अनुवाद यह है कि बैतुल्लाह की क़सम तुमने झूठ कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छोड़ दिया जाएगा। अभी तो हम ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिफ़ा के लिए न नेज़ा बाज़ी की है और न ही तीर-अंदाज़ी और तुमने झूठ कहा है कि हम उनको तुम्हारे हवाले कर देंगे जब तक हमारी लाशें उनके गिर्द न पड़ी हों और हम अपने बेटों और बेटियों से ग़ाफ़िल न हो जाएं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया में गवाही देता हूँ कि तुम शहीद हो।

(सबलुल वल् रिशाद, रिशाद 4 पृष्ठ 35-36 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)(ओसोदुल गाबा, भाग 3 पृष्ठ 548 प्रकाशन आदारुल कुतुब बेरुत)

इस मौक़े पर अबुजहल ने एक दुआ की थी

इस का वर्णन यूं मिलता है कि जब दोनों लश्कर आपस में मिल गए अर्थात शदीद लड़ाई होने लगी तो अबुजहल ने दुआ की कि हे ख़ुदा हम में से जो व्यक्ति क़रीबी रिश्तेदारियों को तोड़ता है और ऐसी बातें वर्णन करता है जो हमने पहले कभी नहीं सुनें तो आज उसे हलाक कर।

(उद्धृत सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 428 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में तहरीर फ़रमाते हैं कि "बदर की लड़ाई के वक़्त में एक व्यक्ति मुसम्मा अम्र बिन हशशाम ने जिसका नाम पीछे से अबुजहल मशहूर हुआ जो कुफ़्फ़ार क़ुरैश का सरदार और सरग़ना था इन अलफ़ाज़ से दुआ की कि اَللّٰهُمَّ مَنْ كَانَ مِنَّا اَفْسَدَ فِي الْقَوْمِ وَاَقْطَعَ لِلرَّحْمِ فَاَحِنْهُ الْيَوْمَ

अर्थात हे ख़ुदा जो व्यक्ति हम दोनों में से (इस शब्द से मुराद अपने नफ़्स और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लिया था) तेरी निगह में एक मुफ़सिद आदमी है और क़ौम में फूट डाल रहा है और आपसी ताल्लुक़ात और हुक़ूक़ क़ौमी को काट कर क़ता रहम का मूजिब हो रहा है आज उसको तू हलाक कर दे और उन कलिमात से अबुजहल का यह मंशा था कि न'ऊज़ु-बिल्लाह (हम अल्लाह से पनाह माँगते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक मुफ़सिद आदमी हैं और क़ौम में फूट डाल कर नाहक़ क़ुरैश के मज़हब में एक तफ़र्रुक़ा पैदा कर रहे हैं और तथा उन्होंने तमाम हुक़ूक़ क़ौमी तलफ़ कर दिए हैं और रहम न किए जाने का मूजिब हो गए हैं और मालूम होता है कि अबुजहल को यही यक़ीन था कि गोया न'ऊज़ु-बिल्लाह (हम अल्लाह से पनाह माँगते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी पवित्र और पाक नहीं है। तभी तो उसने दर्द-ए-दिल से दुआ की लेकिन इस दुआ के बाद शायद एक घंटा भी ज़िंदा न रह सका और ख़ुदा के क़हर ने इसी मुक़ाम में उसका सिर काट कर फेंक दिया और जिनकी पाक ज़िंदगी पर वह दाग़ लगाता था वह इस मैदान से फ़तह और नुसरत के साथ आए।"

(चश्म-ए-मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 174-175)

जंग की हालत का नक़्शा एक जगह इस तरह खींचा गया है कि "मैदान-ए-कार-ज़ार में किशत-ओ-ख़ून का मैदान गर्म था। मुस्लमानों के सामने उनसे सहि चंद जमात' अर्थात तीन गुना जमात" थी जो हर किस्म के सामान हर्ब से आरास्ता हो कर इस अज़्म के साथ मैदान में निकली थी कि इस्लाम का नाम-ओ-निशान मिटा दिया जाए और मुस्लमान बेचारे संख्या में थोड़े, सामान में थोड़े, ग़ुर्बत और बेवतनी के सदमात के मारे हुए ज़ाहिरी अस्बाब के लिहाज़ से मक्का वालों के सामने चंद मिनटों का शिकार थे परंतु तौहीद और रिसालत की मुहब्बत ने उन्हें मतवाला बना रखा था और इस चीज़ ने जिससे ज़्यादा ताक़तवर दुनिया में कोई चीज़ नहीं अर्थात ज़िंदा ईमान ने उनके अंदर एक फ़ौक़ुलआदत ताक़त भर दी थी। वह उस वक़्त मैदान-ए-जंग में ख़िदमत देन का वह नमूना दिखा रहे थे जिसकी नज़ीर नहीं मिलती। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से बढ़कर क़दम मारता था और ख़ुदा की राह में जान देने के लिए बेक़रार नज़र आता था। हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो और अली रज़ियल्लाहु अन्हो और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुश्मन की सफ़ों की सफ़ें काट कर रख दें।"(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

(अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 362)

मुस्लमानों के पहले शहीद के बारे में लिखा है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के आज़ाद करदा ग़ुलाम हज़रत मेहजा रज़ियल्लाहु अन्हो को एक तीर का हदफ़ बनाया गया जिससे वह शहीद हो गए। यह मुस्लमानों के पहले व्यक्ति थे जिन्हों ने जाम-ए-शहादत नोश किया। इसके बाद बनी अदी बिन नज्जार के क़बीला के एक व्यक्ति हज़रत हारिस बिन सुराका रज़ियल्लाहु अन्हो ने शहादत हासिल की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हौज़ से पानी पी रहे थे कि आपकी तरफ़ एक तीर फेंका गया जो आपकी गर्दन में पैवस्त हो गया। इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दरजा शहादत पर फ़ाय्ज़ हो गए।

(उद्धृत सीरत इब्ने हिशाम पृष्ठ 428 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो बिन सुराका बिन हारिस जंग बदर में शहीद हुए और वह अभी नौजवान लड़के थे। उनकी माँ रुबय्या बिंत-ए-नज़र हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो की फूफी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आएं। कहने लगीं हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जानते ही हैं जो मुक़ाम हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो का मेरे नज़दीक था। अतः यदि वे जन्नत में है तो मैं सब्र करूँ और सवाब की उम्मीद रखों और अगर कोई और बात है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम देखेंगे कि मैं क्या कुछ करती हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अफ़सोस है। क्या तू दीवानी है? क्या जन्नत एक ही है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नतें तो बहुत सी हैं और तुम्हारा बेटा तो जन्नतुल फ़िरदौस में है।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल्मग़ाज़ी, बाब فضل من شهد بدرا, हदीस 3982)(तब् क़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 387 प्रकाशन दारुल कुतुब बेरूत 1990 ई.)

इस जंग में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का जोश-ए-जिहाद जो देखने में आया उस के बारे में लिखा है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति आज के दिन सब्र के साथ सवाब समझ कर जंग करेगा और पीठ फेर कर नहीं भागेगा ख़ुदा उसको जन्नत में दाख़िल करेगा। यह सुनकर अमीर बिन हुमाम ने जो बनी सलमा में से थे कहा। इस वक़्त उनके हाथ में चंद खजूरें भी थीं जो वह खा रहे थे। जब उन्होंने यह सुना तो उन्होंने कहा वाह! वाह मेरे और जन्नत के दरमयान में बस इतना ही वक़्फ़ा है कि ये लोग मुझको क़तल कर दें और फिर अपनी तलवार पकड़ कर इस क़दर लड़े कि शहीद हो गए।

औफ़ बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो अफरा के बेटे थे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिव स ल्ल म अल्लाह तआला अपने बंदे की किस बात से ख़ुश होता है? फ़रमाया दुश्मन को ज़िरह इत्यादि लिबासहर्ब से ख़ाली हो कर क़तल करने से। इस पर उन्होंने अपनी ज़िरह उतार कर फेंक दी और बहुत से काफ़िरों को क़तल करने के बाद ख़ुद भी शहीद हो गए। (सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 428 मतबूआ दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

अबुजहल के क़तल के बारे में बुख़ारी में जो रिवायत आती है इस के अनुसार हज़रत अबदुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं जंग-ए-बदर के दिन एक सफ़ में खड़ा था। मैं ने निगाह फेरी तो क्या देखता हूँ कि मेरे दाएं और बाएं दो छोटी आयु के नौजवान लड़के हैं जैसे उनकी इस मौजूदगी पर मैं अपने आपको अमन में नहीं समझता था। उन्होंने कहा ये नौजवान लड़के या बच्चे उन्होंने मेरी क्या हिफ़ाज़त करनी है। कहते हैं मैं अमन में नहीं समझता था। इतने में उनमें से एक ने चुपके से जिसकी ख़बर उसके साथी को न हुई मुझे पूछा! मुझे अबु-जहल तो दिखा दो। मैं ने कहा मेरे भतीजे तुझे उस से क्या काम? वह कहने लगा मैं ने अल्लाह से यह अह्द किया है कि अगर मैं उस को देख पाऊँ तो उसे मार डालूँगा या उसके सामने ख़ुद मारा जाऊँगा। फिर दूसरे नौजवान ने चुपके से जिसकी ख़बर उस के साथी को न हुई मुझ से ऐसे ही पूछा। हज़रत अबदुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि मुझे कभी इतनी ख़ुशी न होती अगर मैं उनकी जगह दो मर्दों के दरमयान होता। उनके इस जज़्बे के बावजूद भी उनको तसल्ली नहीं हुई फिर भी चाहते थे कि दो मज़बूत आदमी मेरे दाएं बाएं होते। कहते हैं कि मैं ने इन दोनों को अबुजहल की तरफ़ इशारा करके बताया कि वह है। ये सुनते ही वे दोनों शिकरों की तरह उस पर झपटे और उस को मार डाला और वे दोनों अफरा के बेटे थे मआज़ और मऊज़। (सही अल्बख़ारी, किताब हदीस : 3988) (उम्दतुल कारी, भाग साबे अशर, पृष्ठ 132 प्रकाशन आदारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

हज़रत माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि मैं ने लोगों को बातें करते सुना कि अबुल् हकम तक किसी की रसाई नहीं हो सकेगी। इसलिए मैं ने इरादा कर लिया कि ज़रूर उस पर हमला करूँगा और मैं उस पर झपट पड़ा और तलवार की एक ज़रब से उसका पांव साक़ तक काट दिया। इसके बेटे अक्रमा ने मेरे कंधे पर वार किया और मेरा हाथ उड़ा दिया। केवल चमड़ी के सहारे वह मेरे पहलू में अटका रहा। तमाम दिन में इसी तरह लड़ता रहा जब तकलीफ़ ज़्यादा हुई तो मैं ने इस पर पांव रखकर शरीर से अलैहदा कर दिया। (उद्धृत तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 36 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

जंग के इख़्तेताम पर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक़्तूलीन के दरमयान खड़े हुए और अबुजहल को ढूंढना शुरू किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसको नहीं पाया तो यह दुआ की कि اَللّٰهُمَّ لَا تُعْجِزَنِّيْ فِرْعَوْنَ هٰذِهِ الْاُمَّةِ हेअल्लाह! तू मुझे इस उम्मत के फ़िरऔन के मुक़ाबले पर आजिज़ न कर देना। कहीं बच के न चला जाए। फिर लोगों ने उस की तलाश शुरू की तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे ढूंढ लिया।

(अल् सीरतुल हल्बिया, बाब वर्णन मुग़ाज़िया, भाग 2 पृष्ठ 236 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी दुआ मांगी कि हे ख़ुदा! ऐसा न हो कि वह तेरी गिरिफ़्त से निकल जाए। (अल्तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 36 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबु जहल की लाश को तलाश करने का हुक्म दिया तो अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो मक़्तूलों में तलाश करते हुए उस के पास आए। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि अगर तुमको उसका पता न चले तो इस तरह उस को पहचानना कि उसके घुटने पर एक ज़ख़्म का निशान है क्योंकि मैंने अबुजहल को एक मर्तबा अब्दुल्लाह बिन जुदान के हाँ एक दावत के अवसर पर-ज़ोर का धक्का दिया कि वह घुटनों के बल गिरा और उस के घुटने में ज़ख़्म हो गया। इस का निशान अब तक उस के घुटने में मौजूद है। इब्ने मसऊद कहते हैं कि इसी निशान के साथ मैं ने उस को पहचाना और कुछ रमक़ ज़िंदगी की अभी इस में बाक़ी थी। मैं ने उस की गर्दन पर पांव रख दिया क्योंकि मक्का में उसने मुझ को बहुत तकलीफ़ पहुंचाई थी। मैं ने कहा हे ख़ुदा के दुश्मन! तू ने देखा

कि ख़ुदा ने तुझको कैसा किया!

कहने लगा मुझको किस बात ने ज़लील किया है? एक व्यक्ति को तुमने मार डाला। क्या हुआ? क्या तुमने आज तक किसी ऐसे आदमी को क़तल किया है जो मुझसे ज़्यादा मुअज़्ज़िज़ और साहब-ए-रुत्बा हो? अच्छा यह बताओ कि फ़तह किस की हुई? हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि अबुजहल ने मुझसे अपने आख़िरी वक़्त में जबकि मैं ने उस की गर्दन पर क़दम रखा कहा था कि हे बकरियों के चराने वाले चरवाहे! तू ऐसी जगह पर चढ़ गया है जहां तुझे नहीं चढ़ना चाहिए था। अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि फिर मैं ने उस का सिर काट लिया और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में ला कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पांव में डाल दिया और अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यह दुश्मन-ए-ख़ुदा अबुजहल का सिर है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और फ़रमाया اَللّٰہُ الَّذِیْ لَآ اِلٰہَ غَیْرُہٗ अल्लाह ही वह ज़ात-ए-पाक है इस के सिवा कोई माबूद नहीं। यह इब्ने हशशाम की रिवायत है।

(सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 433 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.) (शरह जरक़ानी, भाग 2, पृष्ठ 297 मतबूआ दारुल कुतुब बेरूत)(सीरत इब्ने हशशाम अनुवादक ,भाग 1, पृष्ठ 447 मतबूआ इदारा इस्लामियात)

और एक रिवायत से मालूम होता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब अबुजहल को क़तल कर दिया तो वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अबुजहल के क़तल के बारे में बताया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके साथ पैदल तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया अल्लाह की क़सम! जिसके साथ कोई इबादत के लायक़ नहीं। मैं ने भी अर्ज़ किया अल्लाह की क़सम जिसके साथ कोई इबादत के लायक़ नहीं। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबुजहल की लाश के पास खड़े हुए और फ़रमाया। हे अल्लाह के दुश्मन हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने तुझे रुस्वा किया।

(मसंदुल इमाम अहमद बिन हनबल, भाग 2, पृष्ठ 165 रिवायत नंबर 4246 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई.)

हज़रत क़तादह रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर उम्मत का फ़िरऔन होता है। इस उम्मत का फ़िरऔन अबुजहल है। अल्लाह तआला ने उसे बुरी तरह क़तल किया। अफरा के दोनों बेटों और मलायका ने उसे क़तल किया और अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसका काम तमाम किया।

(सलुल हुदा वल रिशाद, भाग 4 प्रकाशन 52 दारुल कुतुब बेरूत, 1993 ई.)

हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अबू जहल को फ़िरऔन कहा गया है। परंतु मेरे नज़दीक तो फ़िरऔन से बढ़कर है। फ़िरऔन ने तो आख़िर कहा اٰمَنْتُ اَنَّہٗ لَآ اِلٰہَ اِلَّا الَّذِیْٓ اٰمَنَتْ بِہٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِیْلَ (यूनुस : 91) "कि मैं ईमान लाता हूँ कि कोई माबूद नहीं परंतु वह जिस पर बनीइसराईल ईमान लाए हैं। "परंतु यह आख़िर तक ईमान न लाया। मक्का में सारा फ़साद उसीका था और बड़ा मुतकब्बिर और ख़ुद-पसंद, अज़्मत और शरफ़ को चाहने वाला था।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 4, पृष्ठ 247 ऐडीशन 1984 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "उद्देश्य आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मूसा की तरह अपनी क़ौम के रास्तबाज़ों को दरिंदों और ख़ूनियों से निजात दी और मूसा की तरह उनको मक्का से मदीना की तरफ़ खींच लाया और अबुजहल को जो इस उम्मत का फ़िरऔन था बदर के मैदान-ए-जंग में हलाक किया।"

(तिरयाकुल-क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 15 पृष्ठ 523)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "बदर के अवसर पर कुफ़्फ़ार मक्का जब आए। उन्होंने समझा कि बस अब हम ने मुस्लमानों को मार लिया और अबुजहल ने कहा हम ईद मनाएंगे और ख़ूब शराबें उड़ाएंगे और समझा कि बस अब मुस्लमानों को मार के ही पीछे हटेंगे। लेकिन इसी अबुजहल को मदीना के दो लड़कों ने (कुफ़्फ़ार मक्का मदीना वालों को निहायत ज़लील ख़्याल करते थे और उनको अराईं कहा करते थे क़तल कर दिया।" अर्थात सिर्फ सबज़ियां उगाने वाले, काशतकारी करने वाले। उनको जंग का क्या पता? बहरहाल इन लड़कों ने क़तल कर दिया "और उसे ऐसी हसरत देखनी नसीब हुई कि इस की आख़िरी ख़ाहिश भी पूरी न हो सकी। (अरब में रिवाज था कि जो सरदार होता वह अगर लड़ाई में मारा जाता तो उसकी गर्दन लंबी कर के काटते ताकि पहचाना जाए कि यह कोई सरदार था) अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे देखा (जब यह बे-हिस-ओ-हरकत ज़ख़्मी पड़ा था) और पूछा कि तुम्हारी क्या हालत है? उसने कहा मुझे और तो कोई अफ़सोस नहीं। सिर्फ यह है कि मुझे मदीना के दो अराईं बच्चों ने मार दिया। अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने दरयाफ़त किया कि तुम्हारी कोई ख़ाहिश है? उसने कहा कि अब मेरी यह ख़ाहिश है कि मेरी गर्दन ज़रा लंबी कर के काट दो। उन्होंने कहा मैं तेरी यह ख़ाहिश भी पूरी नहीं होने दूँगा और उस की गर्दन को ठोढ़ी के पास से सख़्ती से काट दिया और वह जो ईद मनानी चाहता था वही उस के लिए मातम हो गया और वह शराब जो उसने पी थी उसे हज़्म होनी भी नसीब न हुई।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 1पृष्ठ 11)

मुशरेकीन पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से कंकरियां फेंके जाने के वाक़िया के बारे में इस तरह लिखा है। सही बुख़ारी में है कि जब आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ेमे में दुआ कर रहे थे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाथ पकड़ लिया। उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! बस कीजिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने रब से दुआ मांगने में बहुत इसरार कर लिया है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िरह पहने हुए थे।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खेमे से निकले और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह पढ़ रहे थे कि سَیُہْزَمُ الْجَمْعُ وَیُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ بَلِ السَّاعَۃُ مَوْعِدُھُمْ وَالسَّاعَۃُ اَدْھٰی وَاَمَرُّ (अल् क़मर : 46-47) अनक़रीब ये सब के सब शिकस्त खा जाऐंगे और पीठ फेर देंगे और यही वह घड़ी है जिस से डराए गए थे और यह घड़ी निहायत सख़्त और निहायत तल्ख़ है

(सही बुख़ारी, किताबुल्-जिहाद वल् सैर, बाब ما قیل فی درع النبی ﷺ و القمیص فی الحرب, हदीस 2915)

उसकी तफ़सील में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

में लिखा है कि "उद्देश्य क्या मुहाजिर और क्या अंसार सब मुस्लमान पूरे ज़ोर-ओ-शोर और इख़लास के साथ लड़े। परंतु दुश्मन की कसरत और उसके सामान की ज़्यादती कुछ पेश न जाने देती थी और नतीजा एक अरसा तक संदिग्ध रहा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बराबर दुआ-ओ-इबतेहाल में व्यस्त थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इज़्तेराब हर क्षण बढ़ता जाता था परंतु आख़िर एक काफ़ी लंबे अरसा के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सजदा से उठे और ख़ुदाई बशारत से سَیُہْزَمُ الْجَمْعُ وَیُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ कहते हुए साएबान से बाहर निकल आए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 362-363)

इमाम राज़ी रहमहुल्लाह सूरत अन्फ़ाल की आयत وَمَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلٰکِنَّ اللّٰہَ رَمٰی (अल् अन्फ़ाल : 18) की तफ़सीर वर्णन करते हुए लिखते हैं कि जब क़ुरैश ने चढ़ाई की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की कि हे अल्लाह ये क़ुरैश क़बीला अपने घोड़ों और सामान-ए-फ़ख़्र के साथ इस हालत में आया कि वह तेरे रसूल को झुठला रहे हैं और तक़्ज़ीब कर रहे हैं

हे अल्लाह मैं तुझसे वह चीज़ तलब करता हूँ जिसका तू ने मुझ से वादा किया है। तो जिबरईल नाज़िल हुए और कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुट्ठी भर मिट्टी लें और उन कुफ़्फ़ार की तरफ़ फेंक दें। फिर जब दोनों लश्करों की आपस में मुठभेड़ हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि वादी के कंकरों से भरी हुई मुट्ठी भर मिट्टी पकड़ाओ जिसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन कुफ़्फ़ार के चेहरों की तरफ़ फेंक दिया और फ़रमाया شَاھَتِ الْوُجُوْہُ अर्थात चेहरे मसख़ हो जाएं, तो मुशरेकीन अपनी आँखें मसलने लगे जिसके नतीजा में वह शिकस्त ख़ुर्दा हो गए। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَمَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلٰکِنَّ اللّٰہَ رَمٰی. अर्थात कंकरों से भरी हुई मुट्ठी जिसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फेंका फ़िल-हक़ीक़त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे नहीं फेंका था क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फेंकना इतना ही असर-अंदाज़ हो सकता है जितना कि एक इन्सान का फेंकना असर-अंदाज़ होता है बल्कि अल्लाह ने उसे फेंका है जिसके नतीजे में इस मिट्टी के ज़र्रात उनकी आँखों तक पहुंच गए। तो यह फेंकने की सूरत तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सादर हुई लेकिन इस का असर अल्लाह तआला की तरफ़ से हुआ।

(तफ़सीर-ए-कबीर अज़ इमाम राज़ी, भाग 8 भाग 15 पृष्ठ 112 मकतबा दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो उस मैदान-ए-जंग का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि साएबान से "बाहर आकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई तो लड़ाई और ख़ून का मैदान गर्म पाया। इस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रेत और कंकर की एक मुट्ठी उठाई और उसे कुफ़्फ़ार की तरफ़ फेंका और जोश के साथ फ़रमाया। شَاهَتِ الْوُجُوْهُ "दुश्मनों के मुँह बिगड़ जाएं" और साथ ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों से पुकार कर फ़रमाया तुरंत हमला करो। मुस्लमानों के कानों में अपने महबूब आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ पहुंची और उन्होंने तकबीर का नारा लगा कर यकदम हमला कर दिया। दूसरी तरफ़ इधर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुट्ठी भर कर रेत फेंकना था कि ऐसी आंधी का झोंका आया कि कुफ़्फ़ार की आँखें और मुँह और नाक रेत और कंकर से भरने शुरू हो गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ये ख़ुदाई फ़रिश्तों की फ़ौज है जो हमारी सहायता को आई है और रिवायतों में वर्णित है कि इस वक़्त कुछ लोगों को फ़रिश्ते नज़र भी आए। बहरहाल उत्बा, शेबा और अबुजहल जैसे क़ुरैश के सरदार तो ख़ाक में मिल ही चुके थे। मुस्लमानों के इस फ़ौरी धावे और आंधी के अचानक झोंके के नतीजा में क़ुरैश के पांव उखड़ने शुरू हो गए और जल्द ही कुफ़्फ़ार के लश्कर में भागड़ पड़ गई और थोड़ी देर में मैदान साफ़ था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)
अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 363)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "इस दर्जा लिक़ा में कभी कबार इन्सान से ऐसे उमूर सादर होते हैं कि जो बशरियत की ताक़तों से बढ़े हुए मालूम होते हैं और इलाही ताक़त का रंग अपने अंदर रखते हैं जैसे हमारे सय्यद-ओ-मौला सय्यदुल रसूल हज़रत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जंग बदर में एक पत्थर कर कंकर की मुट्ठी कुफ़्फ़ार पर चलाई और वह मुट्ठी किसी दुआ के ज़रीया से नहीं बल्कि ख़ुद अपनी रुहानी ताक़त से चलाई परंतु इस मुट्ठी ने ख़ुदाई ताक़त दिखलाई और मुख़ालिफ़ की फ़ौज पर ऐसा ख़ारिक़ आदत उस का असर पड़ा कि कोई उनमें से ऐसा न रहा कि जिसकी आँख पर उस का असर न पहुंचा हो और वे सब अँधों की तरह हो गए और ऐसी व्याकुलता और परेशानी उनमें पैदा हो गई कि मदहोशों की तरह भागना शुरू किया। ईसी मोजिज़ा की तरफ़ अल्लाह तआला इस आयत में इशारा फ़रमाता है अर्थात जब तूने उस मुट्ठी को फेंका वह तूने नहीं फेंका बल्कि ख़ुदा तआला ने फेंका। अर्थात दरपर्दा इलाही ताक़त काम कर गई। इन्सानी ताक़त का यह काम न था।"

(आईना कमालात इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 5 पृष्ठ 65)

बहरहाल थोड़ी देर बाद मुशरेकीन में नाकामी और इज़्तेराब के आसार नमूदार हो गए। उनकी सफ़ें मुस्लमानों के ताबड़तोड़ हमलों से दरहम-बरहम हो गईं। उनमें भगदड़ मच गई। मुस्लमानों ने उनका पीछा किया और उनको शिकस्त-ए-फ़ाश दी।

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो का कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ शदीद जज़बा के बारे में वर्णन आता है कि आख़िर कार जब दुश्मन ने शिकस्त खा कर हथियार फेंक दिए और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उनको गिरफ़्तार करने लगे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा कि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के चेहरे पर इस मंज़र से नागवारी के आसार हैं अर्थात मुस्लमानों के इस अमल को वह नापसंदीदगी की नज़र से देख रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया हे साद ऐसा लगता है कि तुम क़ौम की इस हरकत को अर्थात मुशरिकों को गिरफ़्तार करने को नापसंद कर रहे हो। उन्होंने अर्ज़ किया बेशक हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुशरिकों के साथ हमारी यह पहली और कामयाब जंग है। लिहाज़ा इस में मेरे नज़दीक मुशरिकों को ज़िंदा रखने के मुक़ाबले में ज़्यादा से ज़्यादा क़तल कर देना बेहतर है।

(अल् सीरतुल हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 230 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

कहते हैं मैं क़ैद करने को नापसंद कर रहा हूँ। मैं तो यह चाहता हूँ कि इन सब को क़तल कर दिया जाए।

जंग-ए-बदर में फ़रिश्तों का नुज़ूल उस के बारे में लिखा है अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है। اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ (अल् अन् फ़ाल : 10) जब तुम अपने रब से फ़र्याद कर रहे थे उसने तुम्हारी इल्तिजा को क़बूल कर लिया इस वादे के साथ कि मैं ज़रूर एक हज़ार क़तार दर क़तार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करूँगा

ग़ज़व-ए-बदर में नुज़ूल-ए-मलायका की तसदीक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाई है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के रोज़ फ़रमाया यह जिबराईल हैं। उन्होंने अपने घोड़े की लगाम को पकड़ा हुआ है और जंगी आलात से आरास्ता हैं। सीरत इब्न-ए-हशशाम में असंख्य सहाबा की रिवायात बदर के दिन फ़रिश्तों के नुज़ूल पर दलालत करती थीं।

(उद्धृत दायरा मारुफ़-ए-सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 214 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर, अप्रैल 2022 ई.)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की उनके बारे में बहुत सारी रिवायात हैं। हज़रत जिबरईल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्लमानों में अहल-ए-बदर को क्या मुक़ाम देते हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेहतरीन मुस्लमान या ऐसा ही कोई कलिमा फ़रमाया। जिबरईल ने कहा और इसी तरह वह मलायका भी अफ़ज़ल हैं जो जंग-ए-बदर में हुए।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल्मग़ाज़ी, बाब शहूद अल् मलायका बदर, हदीस 3992)

एक सीरत निगार ने यह भी रिवायत लिखी है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि मुझ से बनी ग़फ़्फ़ार के एक आदमी ने वर्णन किया कि मैं और मेरा एक चचाज़ाद भाई हम दोनों आए और एक ऐसे पहाड़ पर चढ़ गए जहां से बदर का मंज़र दिखाई दे रहा था। हम मुशरिक थे और इंतेज़ार कर रहे थे कि जंग में आफ़त किस पर पड़ती है ताकि हम भी लूटने वालों के साथ लूट में शरीक हो जाएं। इसलिए इसी अस्ना में कि हम पहाड़ पर थे एक बादल का टुकड़ा हमारे क़रीब हुआ। हमने इस में घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ सुनी। मैं ने एक कहने वाले को यह कहते हुए सुना। है आगे बढ़ो। मेरे चचाज़ाद भाई के तो दिल का पर्दा फट गया और वह यह आवाज़ सुनके उसी जगह मर गया और रहा मैं तो मैं भी हलाकत के क़रीब हो गया था। फिर मैं ने अपने आप पर क़ाबू पा लिया।

(सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 431 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

सुहेल बिन अम्र जो उस वक़्त काफ़िर थे वह कहते हैं कि मैंने बदर के दिन चितकबरे घोड़ों पर सफ़ैद लोगों को देखा। वह आसमान और ज़मीन के दरमयान थे और क़ुरैशी अफ़राद को क़तल कर रहे थे और क़ैदी बना रहे थे।

उद्देश्य बदर में फ़रिश्तों को सिर्फ मुस्लमानों ने ही नहीं देखा बल्कि कुफ़्फ़ार ने भी देखा है।

(उद्धृत दायरा मारुफ़-ए-सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 215 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर, अप्रैल 2022 ई.)

अबू उसैद मालिक बन रबिया जो ग़ज़ व-ए-बदर में हाज़िर थे उनकी रिवायत है कि यह वाक़िया उनकी बीनाई जाते रहने के बाद का है। जब उन्होंने वाक़िया बताया, उस वक़्त बता रहे हैं जब उनकी बीनाई जाती रही थी। उन्होंने कहा कि आज मैं बदर में होता और मेरी बीनाई भी होती तो मैं तुमको (जब यह सुना रहे थे उस वक़्त उनकी आँखों की बीनाई चली गई थी लेकिन बदर का वाक़िया के बारे में उनको बता रहे हैं कि जब मेरी बीनाई थी और बदर में मैं ने ख़ुद देखा) यदि मेरी बीनाई होती तो मैं तुम्हें वह घाटी भी दिखाता जिससे फ़रिश्ते निकले। मुझे इस में न कोई शक है और न संदेह। अबू दाऊद माज़नी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है जो ग़ज़व-ए-बदर में हाज़िर थे। उन्होंने कहा बेशक मैंने बदर के रोज़ एक मुशरिक का पीछा किया ताकि उस पर वार करूँ तो अचानक मैंने देखा कि मेरी तलवार उस तक पहुंचने से पहले उसका सिर कट कर गिर पड़ा। मैंने जान लिया कि उसे मेरे सिवा किसी और ने क़तल किया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि बदर के दिन फ़रिश्तों की अलामत सफ़ैद अमामे थे जिनके शिमले उन्होंने अपनी पीठों पर लटकाए हुए थे और हुनैन के रोज़ सुर्ख़ अमामे उनकी अलामत थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि अमामे अरबों के ताज हैं और बदर के रोज़ फ़रिश्तों की अलामत सफ़ैद अमामे थे जो उन्होंने अपनी पीठों पर लटकाए हुए थे परंतु हज़रत जिबराईल के सिर पर लाल इमामा था।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि फ़रिश्तों ने बदर के सिवा किसी और जंग में क़िताल नहीं किया। वह दूसरी जंगों में संख्या और मदद को बढ़ाने के लिए शरीक होते थे, किसी को मारते नहीं थे।

(सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 431-432 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.) सीरत इब्ने-ए-हशशाम की यह रिवायत है।

कुछ लोगों का ख़्याल है कि फ़रिश्तों का नुज़ूल महिज़ मोमिनों के लिए बतौर बशारत और उनके दिल के संतोष के लिए था इत्यादि फ़रिश्ते जंग में अमलन शरीक नहीं हुए। यह तसव्वुर भी कुछ अहादीस सहीहा जो हैं उस के मुनाफ़ी है। सही रिवायत से साबित है कि फ़रिश्ते जंग में अमलन शरीक हुए। अलबत्ता यहां ये अशकाल पैदा होता है कि नुसरत के लिए तो एक ही फ़रिश्ता काफ़ी था तो हज़ारों फ़रिश्ते क्यों नाज़िल हुए।

इमाम इब्न-ए-कसीर सहीहेन में मौजूद अर्सा-ए-जंग में फ़रिश्तों के नुज़ूल की अहादीस नक़्ल करने के बाद लिखते हैं कि अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्तों का नुज़ूल और मुस्लमानों को इस की इत्तिला बतौर ख़ुशख़बरी थी अन्यथा अल्लाह उस के बग़ैर भी अपने दुश्मनों के ख़िलाफ़ मुस्लमानों की मदद कर सकता है। इसलिए उसने फ़रमाया मदद केवल अल्लाह की तरफ़ से है और सूरत मुहम्मद में फ़रमाया अल्लाह चाहे तो ख़ुद ही इन काफ़िरों से बदला ले-ले लेकिन वह आज़माता है। (उद्धृत दायरा मारुफ सीरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग 6 पृष्ठ 218-219 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर, अप्रैल 2022 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "जंग-ए-बदर में ख़ुदा तआला ने बादलों में से ही अपना चेहरा ज़ाहिर किया अर्थात अभी जंग शुरू भी नहीं हुई थी कि बारिश हुई जिससे कुफ़्फ़ार को शदीद नुक़्सान और मोमिनों को जंगी लिहाज़ से अज़ीमुश्शान फ़ायदा पहुंचा और फिर मोमिनों की मदद और कुफ़्फ़ार पर रोब तारी करने के लिए मलायका भी दिलों पर नाज़िल हुए बल्कि जंग-ए-बदर में कई कुफ़्फ़ार ने मलायका को अपनी आँखों से भी देखा और قُضِيَ الْأَمْرُ के अधीन अरब के सरदार चुन-चुन कर मारे गए।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 2 पृष्ठ 458)

इसी तरह तफ़सीर-ए-सग़ीर में सूरत आले इमरान आयत 127 के तहत तफ़सीरी नोट में लिखा है "इस में बताया है कि फ़रिश्तों का वर्णन सिर्फ इस लिए है कि ख़ाब या कशफ़ में ख़ुशख़बरी मिलने से इन्सान की हिम्मत बढ़ती है अन्यथा असल मुराद यही थी कि ख़ुदा तआला मदद करेगा। (तफ़सीर-ए-सग़ीर, पृष्ठ 96 सूरत आले इमरान ज़ेरधीन : 127)

बहरहाल यह एक कशफ़ी रंग था जो एक हक़ीक़ी हालत थे लोगों ने भी देखा और ग़ैरों ने भी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं यह आप जो वर्णन है किताब अल् तबलीग़, आईना कमालात इस्लाम में है। इस में अरबी में वर्णन है तू अरबी वाले कई दफ़ा कहते हैं कि आप लंबे इक़तेबास पढ़ते हैं तो हमें तर्जुमा करना मुश्किल हो जाता है। इसलिए मैं कोशिश करता हूँ कि अरबी भी पढ़ दूं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमतें हैं :

"وَ قَدْ جَرَتْ عَادَتُهُ وَ سُنَّتُهُ أَنَّهُ يَخْتَارُ الْإِخْفَاءَ وَالْكَتْمَ فِيْ وَاقِعَاتٍ قَضَتْ حِكْمَتُهُ إِخْفَاءَهَا وَ يَخْلُقُ الْأَهْوَاءَ فَتَحْشُرُ الْآرَاءُ إِلٰى جِهَاتٍ أُخْرٰى۔ وَإِذَا أَرَادَ إِخْفَاءَ صُوْرَةِ نَفْسِ وَاقِعَةٍ فَرُبَّمَا يُرِيْ فِيْ تِلْكَ الْمَوَاضِعِ الْوَاقِعَةَ الْكَبِيْرَةَ صَغِيْرَةً مَهُوْنَةً وَالْوَاقِعَةَ الصَّغِيْرَةَ الْمَسْنُوْنَةَ كَبِيْرَةً نَادِرَةً وَالْوَاقِعَةَ الْمُبَشِّرَةَ مُخَوِّفَةً وَالْوَاقِعَةَ الْمُخَوِّفَةَ مُبَشِّرَةً۔ فَهٰذِهٖ أَرْبَعَةُ أَقْسَامٍ مِنَ الْوَاقِعَاتِ مِنْ سُنَنِ اللّٰهِ كَمَا مَضٰى۔ أَمَّا الْوَاقِعَةُ الْكَبِيْرَةُ الْعَظِيْمَةُ الَّتِيْ أَرَادَ اللّٰهُ أَنْ يُّرِيَهَا صَغِيْرَةً حَقِيْرَةً فَنَظِيْرُهَا فِي الْقُرْآنِ وَاقِعَةُ بَدْرٍ لِمَنْ يَتَدَبَّرُ وَيَرٰى۔ فَإِنَّ اللّٰهَ قَلَّلَ أَعْدَاءَ الْإِسْلَامِ بِبَدْرٍ فِيْ مَنَامِ رَسُوْلِهٖ لِيُذْهِبَ الرَّوْعَ عَنْ قُلُوْبِ الْمُسْلِمِيْنَ وَيَقْضِيَ مَا أَرَادَ مِنَ الْقَضَاءِ۔ وَأَمَّا الْوَاقِعَةُ الَّتِيْ أَرَادَ اللّٰهُ أَنْ يُّرِيَهَا كَبِيْرَةً نَادِرَةً فَنَظِيْرُهَا فِي الْقُرْآنِ بِشَارَةُ مَدَدِ الْمَلَائِكَةِ كَيْ تَقَرَّ قُلُوْبُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَأْخُذَهُمْ خِيْفَةٌ فِيْ ذَالِكَ الْمَأْوٰى۔ فَإِنَّهُ تَعَالٰى وَعَدَ فِي الْقُرْآنِ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَبَشَّرَهُمْ بِأَنَّهُ يُمِدُّهُمْ بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ وَمَا جَعَلَ هٰذَا الْعَدَدَ الْكَثِيْرَ إِلَّا لَهُمْ بُشْرٰى۔ لِأَنَّ فَرْدًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ يَقْدِرُ بِإِذْنِ رَبِّهٖ عَلٰى أَنْ يَّجْعَلَ عَالِيَ الْأَرْضِ سَافِلَهَا فَمَا كَانَ حَاجَةٌ إِلٰى خَمْسَةِ آلَافٍ بَلْ إِلٰى خَمْسَةٍ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ شَاءَ أَنْ يُّرِيَهُمْ نُصْرَةً عَظِيْمَةً فَاخْتَارَ لَفْظًا يُفْهَمُ مِنْ ظَاهِرِهٖ كَثْرَةُ الْمُمِدِّيْنَ وَأَرَادَ مَا أَرَادَ مِنَ الْمَعْنٰى۔ ثُمَّ نَبَّهَ الْمُؤْمِنِيْنَ بَعْدَ فَتْحِ بَدْرٍ أَنَّ عِدَّةَ الْمَلَائِكَةِ مَا كَانَتْ مَحْمُوْلَةً عَلٰى ظَاهِرِ أَلْفَاظِهَا بَلْ كَانَتْ مُؤَوَّلَةً بِتَأْوِيْلٍ يَعْلَمُهُ اللّٰهُ بِعِلْمِهِ الْأَرْفَعِ وَالْأَعْلٰى۔ وَ فَعَلَ كَذَالِكَ لِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُهُمْ بِهٰذِهِ الْبُشْرٰى وَيَزِيْدَهُمْ حُسْنَ الظَّنِّ وَالرَّجَاءِ"

(التبلیغ، روحانی خزائن، جلد5، صفحہ447تا449)

इसका अनुवाद यह है कि उसकी अर्थात अल्लाह तआला की यह आदत और सुन्नत हमेशा से जारी है कि वह इन वाक़ियात को ख़ुफ़ीया और पोशीदा रखता है जिनकी हिक्मत उनका इख़फ़ा चाहती है और लोगों की ख़ाहिशात और आरा असल हक़ीक़त के बरख़िलाफ़ होती हैं। कभी कबार इस बड़े वाक़िया को एक छोटा और मामूली वाक़िया दिखाता है और छोटे वाक़िया को बड़ा और नादिर वाक़िया के तौर पर वर्णन करता है और ख़ुशख़बरी देने वाले वाक़िया को डराने वाला और डराने वाले वाक़िया को ख़ुशख़बरी देने वाला वाक़िया दिखाता है। यह वाक़ियात की चार इक़साम हैं जो कि अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ जारी-ओ-सारी हैं। वह अज़ीम और बड़ा वाक़िया जिसे अल्लाह तआला ने चाहा कि उसे छोटा और हक़ीर कर के दिखाए वह वाक़िया-ए-जंग बदर का है इस के लिए जो चाहे कि तदब्बुर करे और आँखें खोले। अतः अल्लाह ने बदर के अवसर पर अपने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ाब में इस्लाम के दुश्मन को कम कर के दिखाया। अवसर पर अपने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ाब में इस्लाम के दुश्मनों को कम कर के दिखलाया ताकि मुस्लमानों के दिलों से उनका डर दूर हो जाए और ताकि अल्लाह जो इरादा करता है वह पूरा हो कर रहे और वह वाक़िया जिसे अल्लाह ने चाहा कि बड़ा और नादिर करके दिखाये तो इस की नज़ीर क़ुरआन में फ़रिश्तों की मदद की ख़ुशख़बरी का वाक़िया है ताकि मोमिनों के दिलों को ठंडक पहुंचे और मार्के में उन्हें कोई डर न हो। अतः अल्लाह तआला ने क़ुरआन में मोमिनों से वादा किया और उन्हें ख़ुशख़बरी दी कि वह पाँच हज़ार फ़रिश्तों से उनकी मदद को आएगा। इस अदद को ज़्यादा करके इसलिए दिखाया ताकि उन के लिए ख़ुशख़बरी हो। हालाँकि फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता ही यह क़ुदरत रखता है कि वह अपने रब के हुक्म से ज़मीन को ध्वस्त कर दे। इस के लिए पाँच हज़ार की नहीं बल्कि पाँच की भी ज़रूरत नहीं है लेकिन अल्लाह तआला ने चाहा कि उनको अज़ीम नुसरत दिखाये तो उसने वह शब्द इख़तेयार किया जिससे इमदाद करने वाले की कसरत ज़ाहिर होती है और यही मुराद लिया था। फिर उसने फ़तह बदर के बाद मोमिनों को ख़बर दी कि फ़रिश्तों की संख्या ज़ाहिरी अलफ़ाज़ पर महमूल नहीं थी बल्कि उसकी वह तावील थी जो कि अल्लाह बुलंद-ओ--बरतर जानता है और अल्लाह ने ऐसा इसलिए किया ताकि इस ख़ुशख़बरी के ज़रीये उनके दिलों को इतमेनान हो और उन्हें हुस्न-ए-ज़न और उम्मीद बढ़ाए।

मुशरेकीन की शिकस्त के बारे में लिखा है कि थोड़ी देर बाद मुशरेकीन के लश्कर में नाकामी और इज़तेराब के आसार हो गए जब खुली जंग शुरू हुई तो आसार नमूदार हो गए। उनकी सफ़ें मुस्लमानों के ताबड़तोड़ हमलों से दरहम--बरहम होने लगीं। मार्का अपने अंजाम के क़रीब जा पहुंचा जैसा कि पहले भी वर्णन हुआ। फिर मुशरेकीन के जत्थे बे-तरतीबी के साथ पीछे हटे और उनमें भगदड़ मच गई। मुस्लमानों ने मारते काटते और पकड़ते बाँधते उनका पीछा किया यहां तक कि उनको भरपूर शिकस्त हो गई।

(अल् रहीक़ुल अल् मुख़्तूम पृष्ठ 299 अल् मकतब अल् सलफ़ी लाहौर 2000 ई.)

फिर एक जगह लिखा है कि यह मार्का मुशरेकीन की शिकस्त-ए-फ़ाश और मुस्लमानों की फ़त्हे मुबीन पर ख़त्म हुआ और इस में चौदह मुस्लमान शहीद हुए। छः मुहाजेरीन में से और आठ अंसार में से लेकिन मुशरेकीन को भारी नुक़्सान उठाना पड़ा। उनके सत्तर आदमी मारे गए और सत्तर क़ैद किए गए जो उमूमन क़ायद और सरदार और बड़े बड़े प्रभावी थे।

(अल् रहीक़ुल अल् मुख़्तूम अनुवाद, पृष्ठ 306 अल् मक्तबतुल सिफ़लिया लाहौर 2000 ई.)

ग़ज़्व-ए-बदर में शहीद होने वाले जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थे वह ये थे।

कल चौदह मुस्लमानों ने जाम-ए-शहादत नोश फ़रमाया जैसा कि वर्णन हुआ है। उनमें से छः मुहाजेरीन में से और आठ अंसार में से थे। मुहाजेर जो थे उनमें उबैदा बिन हारिस बिन मुत्तलिब, अमीर बिन अबी वक़्क़ास, ज़ू शुमालेन अर्थात अमीर बिन अबद उमर, आक़िल बिन बुकेर, मेहजा मौला उमर बिन ख़त्ताब, सफ़वान बिन बेज़ा। और अंसार में से साद बिन ख़ैसमा, मुबश्शिर बिन अब्दुल मुनज़ीर, यज़ीद बिन हारिस, उमेर बिन हुमाम, राफ़े बिन मुअल्ला, हारिस बिन सुराका

मुशरेकीन के मक़्तूलीन जो थे वे सत्तर मुशरेकीन थे जो हलाक हुए। ज़्यादा--तर क़ुरैश के सरदार थे। कुछ अहम और पसिद्ध मक़्तूलीन के नाम ये हैं। हंज़ला बिन अबूसुफ़ियान, हारिस बिन हज़रमी, आमिर बिन हज़रमी, उबैदा बिन सईद बिन आस, आस बिन सईद बिन आस, उक्बा बिन अबी मुईत, उत्बा बिन रबीया, शीबा बिन रबीया, वलीद बिन उत्बा बिन रबीया, हारिस बिन आमिर, अबुल बख़्तरी आस बिन हशशाम, नज़र बिन हारिस, आस बिन हशशाम, आस बिन हशशाम का नाम दो दफ़ा है या दो व्यक्ति हैं। अबुल्लास बिन क़ैस, उमय बिन खलफ, अबुजहल जिसका नाम अम्र बिन हशशाम था। उनमें से अक्सरियत उनकी थी जो मक्के में मुस्लमानों समेत आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकालीफ़ दिया करते थे।

(सीरत हशशाम, पृष्ठ 476 से 480 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.) (किताब अल्मग़ाज़ी लिल् वाकदी, भाग 1 पृष्ठ 145- आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई. इस बारे में बाक़ी इन शा अल्लाह आगे वर्णन होगा।

कुछ दुआओं की तरफ़ भी तवज्जा दिलाना चाहता हूँ।

फ़लस्तीन के मुस्लमानों के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनके लिए आसानियां पैदा फ़रमाए। मज़लूमों की सहायता फ़रमाए। उनको ऐसी लीडर-शिप या राहनुमा अता फ़रमाए जो उनका हक़ अदा करने वाले हों और उनकी सही राहनुमाई करने वाले हों और उन्हें ज़ुल्मों से निकालने की कोशिश करने वाले हों। उनकी अब बहुत ज़्यादा मज़लूमियत की हालत हो चुकी है और लगता है कोई उनको सँभालने वाला नहीं। कोई उनको राहनुमाई करने वाला नहीं।

मुस्लमान अगर एक हो जाएं तो इन मुश्किलात से निकल सकते हैं।

इसी तरह स्वीडन में और कुछ दूसरे मुल्कों में भी जो आज़ादि-ए-राय और मज़हबी आज़ादी के नाम पर ग़लत काम करने वालों को खुली छुट्टी मिली हुई है और इस बहाने से जो मुस्लमानों के जज़बात से खेल कर आए दिन कोई न कोई ऐसी हरकतें करते हैं जो मुस्लमानों के जज़बात को तकलीफ़ पहुंचाने वाली हैं इंतेहाई करीहा हरकतें हैं। क़ुरआन-ए-करीम की बे-हुरमती है या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में अनुचित शब्द हैं। अल्लाह तआला ही उनके पकड़ के सामान फ़रमाए। इस में भी मुस्लमान हुकूमतों का क़सूर है जिनमें फूट की वजह से इस्लाम मुख़ालिफ़ ताक़तें इस किस्म की ग़लत हरकतें करती हैं। अगर कोई रद्देमल होगा मुस्लमानों की तरफ़ से तो वह भी आरेज़ी ही होगा और ऐसा होगा जिसका कोई असर न हो। अतः मुस्लमान राहनुमाओं और उम्मा के लिए बहुत दुआएं करें उस की बहुत ज़रूरत है।

फिर फ्रांस में जो हालात हैं यहां भी मुस्लमानों को निशाना बनाया जा रहा है और जो मुस्लमानों की प्रतिक्रिया है वह भी ग़लत है या दूसरों का भी साथ मिल के। तोड़ फोड़ से तो कुछ हासिल नहीं होगा। मुस्लमानों को अपने अमल इस्लामी तालीम के मुताबिक़ करने होंगे। जब मुस्लमानों के क़ौल-ओ-फ़ेअल इस्लामी तालीम के मुताबिक़ होंगे तो तभी कामयाबियां भी मिलेंगी। बहरहाल हम तो दुआ कर सकते हैं।

खासतौर पर मुस्लमान दुनिया के लिए और उमूमी तौर पर तमाम दुनिया के लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला हर एक को ज़ुलम से महफ़ूज़ रखे और दुनिया में अमन-ओ-अमान की सूरत-ए-हाल भी पैदा हो जाए। सब एक दूसरे का हक़ अदा करने की एहमियत को समझने वाले हों अन्यथा दुनिया जिस तरफ़ जा रही है कई दफ़ा मैं कह चुका हूँ बहुत बड़ी तबाही की तरफ़ जा रही है। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

इसी तरह पाकिस्तान में जो अहमदी हैं उनके लिए भी बहुत दुआ करें अल्लाह तआला उन्हें भी हर शर से महफ़ूज़ रखे।

फ्रांस में कहने को तो बड़े प्रदर्शन हो रहे हैं और समझा जा रहा है कि जो बंदा, लड़का जिसको मारा गया है उस के हक़ में बहुत कुछ हो रहा है लेकिन अमलन जो पब्लिक का रवय्या है, वहां के लोगों का रवय्या है वह इस तरह से है कि सुना है उन्होंने दोनों के लिए जो फ़ंड रेज़िंग की है, इस पुलिस वाले के लिए भी जिसको पकड़ा गया और उस लड़के के लिए भी जो मारा गया है उस में लड़के के लिए जो फ़ंड रेज़िंग है वह सिर्फ दो लाख यूरो आए हैं और जो पुलिस वाला है जिसको कहते हैंका हम उस के ख़िलाफ़ कार्रवाई करेंगे और हुकूमत भी बयान दे रही है उस के हक़ में उस के लिए, उस की मदद के लिए एक मिलियन से ज़्यादा यूरो जमा हो चुके हैं।

अल्लाह तआला ही रहम फ़रमाए और उन लोगों को इन्साफ़ से चलने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और मुस्लमानों को एक होने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

से सबक़त ले जाने की कोशिश करते हैं और आज तुम हक़ की मनाज़िल में से एक मंज़िल पर हो। इस में अल्लाह तआला वही क़बूल करता है जो उसकी रज़ा के लिए किया जाता है। सख़्ती के मुक़ामात में सब्र ऐसी चीज़ है जिससे अल्लाह ग़म को दूर कर देता है दुख से निजात देता है। आख़रत में इस के साथ निजात पाओगे, इसके साथ अर्थात सब्र दिखाने के ज़रीया नजात पाओगे। तुम में अल्लाह का नबी सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम मौजूद है। वह तुम्हें डराता है और हुक्म देता है कि आज अल्लाह से हया करो कि वह तुम्हारे मुआमले में किसी ऐसी चीज़ से आगाह हो जो उस की नाराज़गी का सबब बने। अल्लाह तआला फ़रमाता है لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ(अल् मोमिन : 11) अल्लाह की नाराज़गी तुम्हारी आपस की नाराज़गियों के मुक़ाबले पर ज़्यादा बड़ी थी। इस चीज़ की तरफ़ देखो जिसका उसने तुम्हें किताब में हुक्म दिया है और उसने तुम्हें अपने निशानात दिखाए और ज़िल्लत के बाद तुम्हें इज़्ज़त बख़शी है। अल्लाह का दामन मज़बूती से थाम लो कि वह तुमसे राज़ी हो जाए। इस जगह तुम अपने रब की आज़माईश पर पूरा उतरो। तुम उसकी रहमत और मग़फ़िरत के मुस्तहिक़ हो जाओगे जिसका उसने तुमसे वादा किया है। इसका वादा हक़ है उसकी बात सच्च है उसकी सज़ा शदीद है। मैं और तुम लोग अल्लाह के साथ हैं जो हय्यो-क़य्यूम है। हम उस से अपनी फ़तह के लिए दुआ करते हैं, उसका दामन थामते हैं, उसी पर तवक्कुल करते हैं, उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। अल्लाह तआला हमें और मुस्लमानों को बख़्श दे। (सबलुल हुदा वल् रिशाद, बाब ग़ज़्व बदर भाग 4 पृष्ठ 34 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) यह उस की तफ़सील थी।

जंग के दौरान कुछ लोगों को क़तल करने से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोका भी था इस बारे में आता है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग बदर के दिन अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया था कि मुझे पता चला है कि बनू हाशिम और कुछ दूसरे लोग क़ुरैश के साथ मजबूरन आए हैं। ख़ुशी से नहीं आए। वह हमसे लड़ना नहीं चाहते। अतः तुम में से जो कोई बनू हाशिम के किसी आदमी से मिले तो वह उस को क़तल न करे और जो अबू बख़्तरी से मिले वह उस को क़तल न करे और जो अब्बास बिन अबदुल मुतलिब जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हैं उनसे मिले तो वह उनको भी क़तल न करे क्योंकि ये लोग मजबूरन क़ुरैश के साथ आए हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बिन अत्बह रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि हम अपने बापों, बेटों, भाईयों और रिश्तेदारों को तो क़तल करें और अब्बास को छोड़ दें। अल्लाह की क़सम ! अगर मैं उसे अर्थात अब्बास को मिला तो मैं तलवार से ज़रूर उसे क़तल कर दूँगा। रावी कहते हैं कि यह ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया। हे अबू हफ़्स। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि अल्लाह की क़सम यह पहला दिन था कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अबू हफ़्स को उपनाम से संबोधित फ़रमाया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा पर तलवार मारी जाएगी? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम मुझे इजाज़त दें कि मैं तलवार से उसकी अर्थात अबू हुज़ैफ़ा की गर्दन उड़ा दूं जिन्हों ने मुनाफ़क़त दिखाई है। अर्ज़ किया कि अल्लाह की क़सम उसने अर्थात अबू हुज़ैफ़ा ने मुनाफ़क़त दिखाई है। हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बाद में कहा करते थे कि मैं इस कलमे की वजह से जो मैं ने उस दिन कहा था चीन में नहीं रहा और हमेशा उस से डरता रहा सिवाए उस के कि शहादत मेरी इस बात का कफ़्फ़ारा कर दे। इसलिए हज़रत अबू हनीवा रज़ियल्लाहु अन्हो जंग यमामा के दिन शहीद हो गए

(सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 429 बाब ग़ज़वा बदर मतबू आदारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.)

इस की तफ़सील के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से मुख़ातब हो कर यह भी फ़रमाया कि लश्कर कुफ़्फ़ार में कुछ ऐसे लोग भी शामिल हैं जो अपने दिल की ख़ुशी से इस मुहिम में शामिल नहीं हुए बल्कि क़ुरैश के सरदार के दबाओ की वजह से शामिल हो गए हैं। अन्यथा वे दिल में हमारे मुख़ालिफ़ नहीं। इसी तरह कुछ ऐसे लोग भी इस लश्कर में शामिल हैं जिन्हों ने मक्का में हमारी मुसीबत के वक़्त में हमसे शरीफ़ाना सुलूक किया था और हमारा फ़र्ज़ है कि उनके

एहसान का बदला उतारें।" उनकी इस शराफ़त की वजह से जो मक्का में मुस्लमानों से करते रहे।" अतः अगर किसी ऐसे व्यक्ति पर कोई मुस्लमान विजय पाए तो उसे किसी किस्म का कष्ट न पहुंचाए । और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुसूसियत के साथ क़िस्म अव्वल में अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब और क़सम सानी में अब्दुल बख़्तरी का नाम लिया और उन के क़तल से मना फ़रमाया।" क्योंकि ये लोग मुस्लमानों की तकलीफ़ दूर करने की कोशिश करते थे इसलिए मना फ़रमाया।" परंतु हालात ने कुछ ऐसी नागुरेज़ सूरत इख़्तेयार की कि अबुल बख़्तरी क़तल से बच न सका जबकि उसे मरने से पूर्व इस बात का ज्ञान हो गया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके क़तल से मना फ़रमाया है।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए., पृष्ठ 360-361)

तारीख़ में आता है कि इसके बाद आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साएबान में जाकर जो जगह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए बनाई गई थी इस में फिर दुआ में मशग़ूल हो गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी साथ थे और साएबान के इर्द-गिर्द अंसार की एक जमात हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़ेर कमान पहरे पर निर्धारित थी।

(उद्धृत सीरतुल हल्बिह,ज़िकर मगाज़ सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 2 पृष्ठ 221 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर के दिन एक बड़े ख़ेमा में थे कि اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ، اَللّٰهُمَّ إِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدْ بَعْدَ الْيَوْمِ هे मेरे अल्लाह मैं तुझे तेरे ही अह्द और तेरे ही वाअदे की क़सम देता हूँ। हे मेरे रब अगर तू ही मुस्लमानों की तबाही चाहता है तो आज के बाद तेरी इबादत करने वाला कोई न रहेगा।

इतने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाथ पकड़ लिया। उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बस कीजिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने रब से दुआ मांगने में बहुत इसरार कर लिया है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िरह पहने हुए थे अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िरह पहने थे।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खेमे से निकले और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये पढ़ रहे थे। سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ۔ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ (अल्क़मर : 46-47) अनक़रीब ये सब के सब शिकस्त खा जाऐंगे और पीठ फेर देंगे और यही वह घड़ी है जिस से डराए गए थे और ये घड़ी निहायत सख़्त और निहायत तल्ख़ है।

(सही बुख़ारी, किताबुल-जिहाद वल् सैर, बाब ما قيل فی درع النبی ﷺ و القميص فی الحرب, हदीस 2915)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि हज़रत उम्र बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो मुझसे बदर वाले दिन वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुशरिकों को देखा वे एक हज़ार थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो तीन सौ उन्नीस थे। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़िबले की तरफ़ मुँह किया फिर अपने दोनों हाथ फ़ैलाए और अपने रब को बुलंद आवाज़ से पुकारते रहे। اَللّٰهُمَّ اَنْجِزْ لِيْ مَا وَعَدْتَّنِيْ۔ اَللّٰهُمَّ اٰتِ مَا وَعَدْتَّنِيْ۔ اَللّٰهُمَّ اِنْ تُهْلِكْ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ مِنْ اَهْلِ الْاِسْلَامِ لَا تُعْبَدُ فِي الْاَرْضِ۔

अर्थात हे अल्लाह जो तू ने मेरे साथ वादा किया है उसे पूरा फ़र्मा। हे अल्लाह जो तू ने मुझ से वाअदा किया है वे मुझे अता फ़र्मा। हे अल्लाह अगर तू ने मुस्लमानों का ये गिरोह हलाक कर दिया तो ज़मीन पर तेरी इबादत नहीं की जाएगी।

क़िबला की तरफ़ मुँह किए दोनों हाथ फैलाए आप मुसलसल अपने रब को बुलंद आवाज़ से पुकारते रहे यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चादर आपके कंधों से गिर गई। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके पास आए और आपकी चादर उठाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कंधों पर डाल दी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पीछे से चिमट गए और अर्ज़ किया हे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपकी अपने रब के हुज़ूर दर्द से भरी हुई दुआ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए काफ़ी है। वे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किए गए वादे ज़रूर पूरे फ़रमाएगा। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ (अल् अन्फ़ाल : 10) जब तुम अपने रब से फ़र्याद कर रहे थे उसने तुम्हारी इल्तिजा को क़बूल कर लिया इस वाअदे के साथ कि मैं ज़रूर एक हज़ार क़तार दर क़तार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करूँगा। अतः अल्लाह ने फरिश्तों के माध्यम से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद फ़रमाई। यह सही मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम, किताबुल जिहाद वल सैर, باب الامداد بالملائكة فی غزوة بدر و اباحة الغنائم, हदीस नंबर 4588)

इस वाक़िया को हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी किताब में इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि फिर "आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साय्बान में जाकर दुआ में मशग़ूल हो गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी साथ थे और साएबान के इर्द-गिर्द अंसार की एक जमात साद बिन मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़ेर-ए-कमान पहरा पर मुतय्यन थी। थोड़ी देर के बाद मैदान में से एक शोर बुलंद हुआ और मालूम हुआ कि क़ुरैश के लश्कर ने आम हमला कर दिया है। उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निहायत रिक़्क़त की हालत में ख़ुदा के सामने हाथ फैलाए हुए दुआएं कर रहे थे और निहायत इज़्तेराब की हालत में फ़रमाते थे कि

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ۔ اَللّٰهُمَّ اِنْ تُهْلِكْ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ مِنْ اَهْلِ الْاِسْلَامِ لَا تُعْبَدُ فِي الْاَرْضِ۔

हे मेरे ख़ुदा ! अपने वादों को पूरा कर। हे मेरे मालिक अगर मुस्लमानों की ये जमात आज इस मैदान में हलाक हो गई तो दुनिया में तुझे पूजने वाला कोई नहीं रहेगा। और इस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस क़दर पीढ़ा की हालत में थे कि कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सजदा में गिर जाते थे और कभी खड़े हो कर ख़ुदा को पुकारते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चादर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कंधों से गिर गिर पड़ती थी और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उसे उठा उठा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर डाल देते थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मुझे लड़ते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़्याल आता था तो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साएबान की तरफ़ भागा जाता लेकिन जब भी मैं गया मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सजदा में गिड़गिड़ाते हुए पाया। और मैं ने सुना कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान पर ये अलफ़ाज़ जारी थे कि يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ۔। अर्थात "हे मेरे ज़िंदा ख़ुदा हे मेरे ज़िंदगी बख़्श आक़ा !" हज़रत अबूबकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस हालत को देख कर बेचैन हुए जाते थे और कभी कभी बेसाख़ता अर्ज़ करते थे "हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर फ़िदा हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घबराएं नहीं। अल्लाह अपने वादे ज़रूर पूरे करेगा परंतु इस सच्चे मक़ूला के मुताबिक़ "फ़ारसी का मक़ूला है" "که هر که عارف تر است ترساں تر۔" अर्थात हर कोई जो जितनी मार्फ़त रखता है उतना ही वे डरता भी है।"आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बराबर दुआ और गियार ओ ज़ारी में मसरूफ़ रहे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

(अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए, पृष्ठ : 361)

तवक्कुल क्या है? उसकी वज़ाहत करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह वाक़िया वर्णन फ़रमाया है। फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के मुक़ाम पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक तर्तीब क़ायम की। उनको अपनी अपनी जगहों पर खड़ा किया। उन्हें नसीहतें कीं कि यूं लड़ना है और इसके बाद एक अर्श पर बैठ कर दुआएं करने लग गए। यह नहीं किया कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना में छोड़ जाते और आप अकेले वहां बैठ कर दुआएं करने लग जाते। बल्कि पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को लेकर मुक़ाम-ए--जंग पर पहुंचे फिर उनको तर्तीब दी और उनको नसीहतें फ़रमाएं। इसके बाद

अर्शा पर बैठ गए और दुआएं करनी शुरू कर दीं। यह तवक्कुल है जो इख़्तेयार करना चाहिए।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 6 पृष्ठ 541)

अर्थात अस्बाब का भी प्रयोग हो, इन्सान जो कुछ अपनी कोशिश से कर सकता है वह करे और फिर दुआओं में लग जाए। उस को तवक्कुल कहते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ में बार-बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को काफ़िरों पर फ़तह पाने का वादा दिया गया था परंतु जब बदर की लड़ाई शुरू हुई जो इस्लाम की पहली लड़ाई थी तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोना और दुआ करना शुरू किया और दुआ करते करते ये शब्द आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह से निकले اَللّٰهُمَّ اِنْ اَهْلَكْتَ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ فَلَنْ تُعْبَدَ فِى الْاَرْضِ اَبَدًا अर्थात हे मेरे ख़ुदा! अगर आज तू ने इस जमात को (जो सिर्फ तीन सौ तेराह थे) हलाक कर दिया तो फिर क़ियामत तक कोई तेरी बंदगी नहीं करेगा। इन अलफ़ाज़ को जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह से सुना तो अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप इस क़दर बेक़रार क्यों होते हैं। ख़ुदा तआला ने तो आपको पुख़्ता वादा दे रखा है कि मैं फ़तह दूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह सच्च है परंतु उस की बेनियाज़ी पर मेरी नज़र है अर्थात किसी वादा का पूरा करना ख़ुदा तआला पर हक़ वाजिब नहीं है।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पंजुम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 21 पृष्ठ 255-256)

अल्लाह तआला बड़ा बेनयाज़ है इसलिए हमें हर दफ़ा, हर वक़्त ख़ौफ़ज़दा रहना चाहिए, फ़िक्रमंद रहना चाहिए।

जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सायबान में दुआ कर रहे थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ऊँघ तारी हुई फिर तुरंत बेदार हुए और फ़रमाया अबू बकर! ख़ुश हो जाओ तुम्हारे परवरदिगार की मदद आ गई है। ये देखो! जिबरईल अपने घोड़े की बाग थामे उसे चलाते आ रहे हैं उसके पांव पर गुबार के निशान हैं।

(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 428 दारुल कुतुब बेरूत 2001 ई.) सीरत इब्ने हशशाम की यह रिवायत है।

फिर एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबूबकर! तुम्हें बिशारत हो यह जिबरईल हैं जो ज़र्द इमामा पहने हुए हैं वे ज़मीन और आसमान के मध्य अपने घोड़ों की लगाम थामे हुए हैं। जब वह ज़मीन पर उतरे तो कुछ देर के लिए मुझसे ग़ायब हुए फिर नमूदार हुए। उनके घोड़े के पांव ग़ुबार-आलूद थे वह कह रहे थे कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ मांगी है तो अल्लाह की नुसरत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ गई है।

(سبل الهدى والرشاد, भाग 4 पृष्ठ 37 वर्णन ग़ज़व बदर अल् कुबरा, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

जंग-ए-बदर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शमूलियत, जंग में ज़ाती तौर पर शमूलियत के बारे में लिखा है कि मैदान-ए-बदर में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो को मैमना पर निर्धारित किया। मिक़दाद बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हो को मयसरा पर और क़ैस बिन अबी सासा रज़ियल्लाहु अन्हो को अर्थात पेदा फ़ौज पर निर्धारित किया। लश्कर की बिलउमूम क़ियादत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगली सफ़ों में थे। नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तमाम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी हिदायात का पाबंद किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में से कोई व्यक्ति उस वक़्त तक पेशक़दमी न करे जब तक मैं उस के आगे न हूँ। इसी तरह नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने असलाह के बा मक़सद प्रयोग की तरग़ीब देते हुए फ़रमाया जब दुश्मन तुम्हारी पहुंच में आ जाए तो तीर चलाना और तीरों को जहां तक संभव हो बचा कर रखना।

यह जो बैठ के दुआ करने का सारा क़िस्सा वर्णन हुआ है ये इस पूरी जंग शुरू होने से पहले का वाक़िया है क्योंकि वह लिखा इस तरह गया है इसलिए समझा जा सकता है कि शायद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग में शामिल नहीं हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शामिल थे लेकिन यह दुआ इस से पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की जिसके नतीजे में फ़रिश्तों की मदद भी अल्लाह तआला ने भेजी। बहरहाल बदर के मैदान-ए-कार-ज़ार में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अमली शिरकत के बारे में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हम बदर के दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आड़ लेते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुश्मन के क़रीब-तर थे। उस दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सब मुजाहेदीन से ज़्यादा सख़्त जंग करने वाले थे। (उद्धृत दायरा मारुफ सीरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6पृष्ठ 174, 201 بزم اقبال لاهور, अप्रैल 2022 ई.)

मैदान-ए-जंग में लश्कर क़ुरैश की आमद और उनकी आपस में तकरार जो हुई, इख़्तेलाफ़ात जो हुए इसके बारे में लिखा है कि जब क़ुरैश मैदान-ए-बदर में उतरे तो उन्होंने उमेर बिन वहब को भेजा कि जाओ देखो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कितने जंगजू हैं? तो अमीर ने अपने घोड़े को लश्कर इस्लाम के गर्द दौड़ाया और फिर क़ुरैश मक्का के पास आकर कहा कि मेरे नज़दीक तो ये लोग तीन सौ के अंदाज़े में कुछ कम या ज़्यादा होंगे। फिर यह दुबारा देखने की ग़रज़ से लौटा कि कहीं लश्कर इस्लाम की मदद के लिए कोई पोशीदा कमीनगाह तो नहीं। अमीर बिन वह्ब अपने घोड़े को दौड़ा कर बहुत दूर तक निकल गया वहां से वापस आकर कहा कि उनकी मदद तो मालूम नहीं होती परंतु क़ुरैश! मैं ने देखा है कि तुम पर बुलाऐं मौत को लेकर नाज़िल हो रही हैं। मैं ने ऐसी ऊंटनियां देखी हैं जो मौतों को उठाए हुए हैं। यसरब के ऊंट यक़ीनी मौत उठाए हुए हैं वे ऐसी क़ौम हैं जिनके पास दिफ़ा का कोई सामान नहीं और उनके पास तलवारों के इलावा कोई पनाह-गाह नहीं। उनमें से कोई क़तल न किया जाएगा यहां तक कि वह हम में से एक एक आदमी को क़तल कर ले। अगर उन्होंने अपनी गिनती के मुताबिक़ हमारे आदमियों को क़तल कर डाला तो उसके बाद ज़िंदगी में क्या लुतफ़ रहेगा। अब जो तुम मुनासिब समझो करो। उसने सारा जायज़ा ले के अपना एक ख़्याल किया।

हकीम बिन हिज़ाम ये बातें सुनकर उत्बा बिन रबीया के पास आया और उसे कहा कि तू क़ुरैश में बर्गुज़ीदा और सरदार है। इसलिएलोगों को वापिस ले जाओ और अम्र बिन हज़रमी का ख़ून बहा अदा कर दो। उत्बा ने कहा मुझे मंज़ूर है। अतः तुम इब्ने हन्ज़लिया अर्थात अबुजहल, अबुजहल की माता का नाम हन्ज़लिया था, उसके पास जाओ। इसलिए हकीम बिन हिज़ाम इस उद्देश्य के लिए अबुजहल के पास गया और कहा कि मुझे उत्बा ने तुम्हारे पास भेजा है कि वह दियत अदा कर देगा तुम क़ुरैश को वापस ले चलो। अबु जहल कहने लगा कि उत्बा ने जब से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा है वह डर गया है और बुज़दिली का मुज़ाहरा करने लगा है। हरगिज़ नहीं।

बख़ुदा हम नहीं लूटेंगे यहां तक कि अल्लाह हमारे दरमयान और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरमयान फ़ैसला कर दे। अबु जहल ने यह भी कहा कि उत्बा इसलिए हमें जंग से रोक रहा है कि वह जानता है कि मुस्लमान हमारे लिए ऊंट के एक निवाले की तरह हैं अर्थात बहुत ही आसानी से हम उन्हें क़तल कर देंगे और उन मुस्लमानों में उत्बा का बेटा भी है। उत्बा का बेटा मुस्लमान हो गया था। शायद अपने बेटे की वजह से ये जंग नहीं करना चाहता। उत्बा के ये बेटे हज़रत अबू हनीफा रज़ियल्लाहु अन्हो थे जो मुस्लमानों की तरफ़ से मैदान-ए-बदर में मौजूद थे। जब उत्बा को अबुजहल की तरफ़ से बुज़दिली के इस ताने की ख़बर पहुंची तो उसने कहा इस बुज़दिल अर्थात अबुजहल को जल्द मालूम हो जाएगा कि कौन बुज़दिल है और डरा हुआ है।

(उद्धृत सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 424 से 426 दारुल कुतुब, प्रथम संस्करण 2001 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो उसकी तफ़सील वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि अब फ़ौजें बिल्कुल एक दूसरे के सामने थीं। पहले जंग की हालत में फ़ौजें इकट्ठी हो रही थीं और वज़नी फ़ौज थी काफ़िरों की, इस वक़्त तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुआओं में थे। जब फ़ौजें सामने आगईं, जंग शुरू होने लगी थी उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी मैदान-ए-जंग में थे। फ़रमाया अब फ़ौजें बिल्कुल एक दूसरे के सामने थीं परंतु क़ुदरत-ए-इलाही का अजीब तमाशा है कि इस वक़्त लश्कर के खड़े होने की तर्तीब ऐसी थी कि इस्लामी लश्कर क़ुरैश को असली संख्या से ज़्यादा बल्कि दोगुना नज़र आता था। जिसकी वजह से कुफ़्फ़ार भयभीत हुए जाते थे और दूसरी तरफ़ क़ुरैश का लश्कर मुस्लमानों को उनकी असली संख्या

से कम-नज़र आता था। जिसके नतीजे में मुस्लमानों के दिल बढ़े थे।

क़ुरैश की यह कोशिश थी कि किसी तरह इस्लामी लश्कर की संख्या का सही अंदाज़ा या पता लग जाए ताकि वे छूटे हुए दिलों को सहारा दे सकें। जो दिल डरे हुए थे उनको सहारा दे सकें। इस के लिए क़ुरैश के सरदारों ने अमीर बिन वहब को भेजा कि इस्लामी लश्कर के चारों तरफ़ घोड़ा दौड़ा कर देखे कि इसकी संख्या कितनी है और आया उनके पीछे कोई कुमक तो मख़्फ़ी नहीं? चुनांचे अमीर ने घोड़े पर सवार हो कर मुस्लमानों का एक चक्कर काटा परंतु उसे मुस्लमानों की शक्ल वसूरत से ऐसा जलाल और अज़्म और मौत से ऐसी बेपर्वाई नज़र आई कि वे सख़्त भयभीत हो कर लौटा और क़ुरैश से मुख़ातब हो कर कहने लगा कि मुझे कोई मख़्फ़ी लश्कर इत्यादि तो नहीं नज़र आए लेकिन हे क़ुरैश! अर्थात क़ुरैश की जमात मैं ने देखा है कि मुस्लमानों के लश्कर में गोया ऊंटनियों के कुजावों ने अपने ऊपर आदमियों को नहीं बल्कि मौतों को उठाया हुआ है और यसरब की सांडनियों पर गोया हलाकतें सवार हैं। क़ुरैश ने जब ये बात सुनी तो उन में एक बेचैनी सी पैदा हो गई।

सुराक़ा जो उनका ज़ामिन बन कर आया था कुछ ऐसा भयभीत हुआ कि उल्टे पांव भाग गया और जब लोगों ने उसे रोका तो कहने लगा कि मुझे जो कुछ नज़र आ रहा है वे तुम देखते।

हकीम बिन हिज़ाम ने अमेरिकी राय सुनी तो घबराया हुआ उत्बा बिन रबीया के पास आया और कहने लगा कि हे उत्बा! तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से आख़िर अम्र हज़रमी का बदला ही लेना चाहते हो। वे तुम्हारा हलीफ़ था। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम उस की तरफ़ से ख़ून बहा अदा कर दो और क़ुरैश को लेकर वापस लौट जाओ। इस में हमेशा के लिए तुम्हारी नेक-नामी रहेगी। उत्बा जो ख़ुद घबराया हुआ था, उस को और क्या चाहिए था। झट बोला कि हाँ हाँ यही ठीक है। मैं राज़ी हूँ और फिर वह हकीम बिन हिज़ाम को कहने लगा कि देखो ये मुस्लमान और हम आख़िर आपस में रिश्तेदार ही तो हैं। क्या ये अच्छा लगता है कि भाई भाई पर तलवार उठाए और बाप बेटे पर। तुम ऐसा करो कि अभी अबुल-हकम अर्थात् अबुजहल के पास जाओ और उसके सामने यह तजवीज़ पेश करो और इधर उत्बा ने ख़ुद ऊंट पर सवार हो कर अपनी तरफ़ से लोगों को समझाना शुरू कर दिया कि रिश्तेदारों में लड़ाई ठीक नहीं है। हमें वापस लौट जाना चाहिए और मुहम्मद को उस के हाल पर छोड़ देना चाहिए कि वे दूसरे क़बाय्ल अरब के साथ निपटता रहे जो नतीजा होगा देखा जाएगा। और फिर तुम देखो कि इन मुस्लमानों के साथ लड़ना भी कोई आसान काम नहीं है क्योंकि ख़ाह तुम मुझे बुज़दिल कहो हालाँकि मैं बुज़दिल नहीं हूँ। मुझे तो ये लोग मौत के ख़रीदार नज़र आते हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूर से उत्बा को देखा तो फ़रमाया अगर लश्कर कुफ़्फ़ार में से किसी में शराफ़त है तो उस सुर्ख़ ऊंट के सवार में ज़रूर है। अगर ये लोग उस की बात मान लें तो उन के लिए अच्छा हो लेकिन जब हकीम बिन हिज़ाम अबुजहल के पास आया और उस से ये तजवीज़ वर्णन की तो वह फिरओन-ए-उम्मत भला ऐसी बातों में कब आने वाला था छुटते ही बोला। अच्छा अच्छा अब उत्तबा को अपने सामने अपने रिश्तेदार नज़र आने लग गए हैं। और फिर उसने अम्र हज़रमी के भाई आमिर हज़रमी को बुलाकर कहा कि तुमने सुना तुम्हारा हलीफ़ उत्बा क्या कहता है और वह भी उस वक़्त जबकि तुम्हारे भाई का बदला गोया हाथ में आया हुआ है। आमिर की आँखों में ख़ून उतर आया और उस ने अरब के क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ अपने कपड़े फाड़ कर और नंगा हो कर चिल्लाना शुरू किया وَاعَمْرَاهُ! وَاعَمْرَاهُ! कि हाय अफ़सोस मेरा भाई बग़ैर इंतेक़ाम के रहा जाता है। हाय अफ़सोस मेरा भाई बग़ैर इंटेक़ाम के रहा जाता है। इस सहराई आवाज़ ने लश्कर-ए-क़ुरैश के सीनों में अदावत के शोले बुलंद कर दिए और फिर जंग की भट्टी अपने पूरे ज़ौर से दहकने लग गई।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए, पृष्ठ 358 से 360)

और फिर इसके बाद जब जंग शुरू हुई है तो उस की बाक़ी तफ़सील जो है वह इन शा अल्लाह आगे वर्णन होगी।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

सिर्फ इस क़दर कहते हैं कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत अल्लाह तआला की तौहीद और उस की ज़ात-ओ-सिफ़ात पर कामिल ईमान रखती है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिल-ओ-जान से ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मानती है। हाँ अगर अल्लाह तआला की सिफ़ात पर जैसा कि ईमान लाने का हक़ है अगर कोई ईमान नहीं रखता तो वह जेमीयत के उल्मा और उन जैसे दीगर उल्मा हैं। और अगर कोई आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नहीं मानता तो वह भी जमीयत और उन जैसे उल्मा का गिरोह है और यह बात हम दलायल से इन शाअल्लाह साबित करेंगे।

फिर रोज़नामा मुंसिफ़ हैदराबाद ने तो दिल दुखाने,और झूठ बोलने में जमई से भी एक क़दम आगे रखा है। उसने अपने 25 जुलाई के शुमारा में अहमदिया मुस्लिम जमाअत पर कुछ इंतेहाई झूठे इल्ज़ामात आयद किए हैं। मुंसिफ़ का वह मज़मून इसी पृष्ठ पर मुलाहिज़ा फ़रमाएं। लेखक के कुछ आरोपों को हम निम्न में नक़ल करते हैं जिनका हम इन शाअल्लाह आइन्दा शुमारों में जवाब देंगे। मुंसिफ़ लिखता है।

★ जमीयत उलेमा हिंद, जमात-ए-इस्लामी, जमीयत अहल-ए--हदीस, सुनी उल्मा कौंसल और ख़ासकर मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड पर यह ज़िम्मेदारी आयद होती है कि वह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी और उनके मानने वालों के दीगर मज़ाहिब के ताल्लुक़ से एतेक़ादात और माज़ी में अंग्रेज़ों के साथ मिलकर की गई साज़िशों से वाक़िफ़ करवाएं।

★ मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी ने मुजद्देदीयत, मुहद्दिसिय्यत, महदविय्यत, मसीले-ए-मसीह, मसीहीयत, ज़िल्ली नबी, बरूज़ी नबी, हक़ीक़ी नबी, ज़िल् मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यहाँ तक कि ख़ुदा होने का दावा किया।

★ ख़ुद कादयानी हम मुस्लमानों को मुस्लमान नहीं मानते, जबकि उनकी नज़र में हम मुस्लमान काफ़िर हैं। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अपनी किताब तज़करः पृष्ठ नंबर 519 पर यह फ़त्वा देता है कि ख़ुदा तआला ने मेरे पर ज़ाहिर किया है कि हर एक व्यक्ति जिस को मेरी दावत पहुंची है और उसने मुझे क़बूल नहीं किया वह मुस्लमान नहीं है और ख़ुदा के नज़दीक क़ाबिल मवाख़ज़ा है।

★ एक और जगह मिर्ज़ा ने लिखा अब ज़ाहिर है कि इन इल्हामात में मेरी निसबत बार-बार वर्णन किया गया है कि यह ख़ुदा का फ़िरिस्तादा ख़ुदा का मामूर, ख़ुदा का अमीन और ख़ुदा की तरफ़ से आया है जो कुछ कहता है उस पर ईमान लाओ और उस का दुश्मन जहन्नुमी है। (रिसाला दावत क़ौम, र ख़ 11पृष्ठ 62 हाशिया)

★ अगर इस फ़िल्ना का निवारण नहीं किया गया तो वे दिन दूर नहीं जब वह हुकूमत को ग़लत बात पर विश्वास करवाते हुए मुस्लमानों की मसाजिद और इदारों पर क़ब्ज़े करने लग जाएं।

इन समस्त आरोपों का उतर हम इन शा अल्लाह अगले अंकों में देंगे। (मंसूर अहमद मसरूर)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 31 August 2023 Issue No. 32-35

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

"मुझ को काफ़िर कह के अपने कुफ़्र पर करते हैं मोहर
यह तो है सब शक्ल उनकी हम तो हैं आईना दार"
(हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद और मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम की कविता)

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा पर अख़बार मुंसिफ़ हैदराबाद के आरोपों का उत्तर

पिछले दिनों आंधरा प्रदेश राज्य के वक़्फ़ बोर्ड की तरफ़ से यह बयान जारी किया गया कि अहमदी मुस्लमान नहीं हैं और जमाअत अहमदिया मुस्लिमा को ग़ैर मुस्लिम क़रार दिया गया जिस पर अल्प-संख्यक मामले की केंद्रीय मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी ने 26 जुलाई 2023 बुधवार के दिन, वक़्फ़ बोर्ड आंधरा के इस क़दम को ग़लत बताते हुए कहा कि किसी भी राज्य के वक़्फ़ बोर्ड को, किसी भी व्यक्ति या बिरादरी को धर्म से निकालने का कोई इख़्तेयार नहीं। उन्हों कहा कि समस्त वक़्फ़ बोर्ड, पार्लीमैंट के द्वारा बनाए गए ऐक्ट के अधीन आते हैं। कोई भी वक़्फ़ बोर्ड देश की पार्लीमैंट के सम्मा को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता और क़वानीन के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं कर सकता जो पार्लीमैंट में बनाए गए हैं। उन्होंने और कहा कि वक़्फ़ बोर्ड को ऐसी इजाज़त नहीं दी जा सकती कि जारी करदा फ़त्वा को हुकूमत के अहकाम में तबदील कर दें, हमने इस विषय पर चीफ़ सैक्रेटरी आंधरा प्रदेश से उत्तर मांगा है।

श्रीमती स्मृति ईरानी के इस बयान पर मुस्लमान उल्मा, तंज़ीम और अख़बारात ने अपने ग़म और गुस्से का इज़्हार किया है और श्रीमती स्मृति ईरानी के बयान को ग़लत ठहराते हुए वक़्फ़ बोर्ड के बयान को दुरुस्त और जायज़ क़रार दिया और जमाअत अहमदिया के काफ़िर और ग़ैर मुस्लिम होने पर अपनी मन घड़त और तर्कहीन दलीलें दी हैं। केवल इसी पर बस नहीं बल्कि कुछ झूठे और इंतेहाई न वाजिब और बेबुनियाद इल्ज़ामात भी जमाअत पर लगाएं हैं। इन शा अल्लाह हम उनकी समस्त मनघड़त, तर्कहीन और बे सबूत और झूठी बातों का तफ़सील से उत्तर देंगे।

जमीयत उलेमा हिंद ने एक प्रेस रीलीज़ जारी करते हुए लिखा कि जमाअत अहमदिया को ग़ैर मुस्लिम क़रार देने में वक़्फ़ बोर्ड आंधरा प्रदेश का मत सही है और इस सिलसिले में मर्कज़ी वज़ीर श्रीमती स्मृति ईरानी का यह आग्रह अनुचित और अतार्किक है। जमीयत उलेमा हिंद ने अहमदिया मुस्लिम जमाआत को ग़ैर मुस्लिम क़रार देने के सिलसिला में क्या दलीलें दी हैं इस का वर्णन हम निम्न में करते हैं। जमीयत ने अपने प्रेस रीलीज़ में लिखा है :

"इस्लाम की बुनियाद दो अहम अक़ीदों पर है। (1) तौहीद अर्थात सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला को अपनी ज़ात और सिफ़ात में एक मानना और उस के साथ किसी को शरीक न क़रार देना। (2) रिसालत अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा के रसूल और आख़िरी नबी हैं। आप पर वह्यी और नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म हो चुका है और आपकी शरीयत आख़िरी और मुकम्मल शरीयत है। इन इस्लामी अक़ीदों के बरअक्स मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी ने ऐसा मौक़िफ़ इख़्तेयार किया जो अक़ीदा ख़त्म-ए-नबुव्वत के पूर्णतः ख़िलाफ़ है। इस उसूली और वाकेई इख़्तेलाफ़ की मौजूदगी में क़ादियानियत को इस्लामी फ़िर्क़ों में शुमार करने की कोई बुनियाद मौजूद नहीं है और उम्मत-ए-इस्लामीया के समस्त ही मकातिब-ए-फ़िक्र उस फ़िर्क़ा के ग़ैर मुस्लिम होने पर सहमत हैं।

इस सिलसिले में मारूफ़ तंज़ीम "राबता आलिम-ए-इस्लामी" ने अपने इज्लास 6 से 10 अप्रैल 1974 में एक सौ दस मुल्कों से आए हुए मुस्लिम तन्ज़ीमों के नुमाइंदों के इत्तेफ़ाक़-ए-राय से क़ादियानियत के मुताल्लिक़ तजवीज़ मंज़ूर करते हुए ऐलान किया था कि यह गिरोह इस्लाम से ख़ारिज और मुसलमानों का दुश्मन है।"

जबकि जमीयत ने अहमदिया मुस्लिम जमाअत को इस वजह से ग़ैर मुस्लिम क़रार दिया है कि :

★ अहमदिया मुस्लिम जमाअत अल्लाह तआला की तौहीद पर ईमान नहीं रखती और उस को अपनी ज़ात-ओ-सिफ़ात में एक नहीं मानती

★ अहमदिया मुस्लिम जमाअत आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी नहीं मानती।

★ आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह्यी और नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म नहीं मानती और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत को आख़िरी और मुकम्मल शरीयत नहीं मानती।

★ उम्मत-ए-इस्लामिया के तमाम ही मकातिब-ए-फ़िक्र उस फ़िर्क़ा के ग़ैर मुस्लिम होने पर सर्वसहमत हैं।

★ राबिता आलिम-ए-इस्लामी ने ऐलान किया था कि यह गिरोह इस्लाम से ख़ारिज और मुसलमानों का दुश्मन है।

अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी ज़ात और सिफ़ात के मुताल्लिक़ और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ जो बातें जमीयत ने अहमदिया मुस्लिम जमाअत की तरफ़ मंसूब की हैं वह सब झूठ के एक बदबूदार पलंदा के सिवा कुछ भी नहीं। हम इन तमाम एतराज़ात और इत्तेहाम का जवाब तफ़सील से देंगे। सरदसत

शेष पृष्ठ 11 पर

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad